गुलज़ार (गीतकार)

गुलज़ार

जन्म नाम सम्पूर्ण सिंह कालरा

जन्म अगस्त 18, 1936 (आयु 80 वर्ष)

दीना, झेलम जिला, पंजाब, ब्रिटिश भारत

व्यवसाय निर्देशक,

गीतकार,

पटकथा लेखक,

निर्माता,

कवि

कार्यकाल 1961 - वर्तमान

जीवनसाथी राखी गुलज़ार

सन्तान मेघना गुलज़ार

पुरस्कार और सम्मान

अकादमी पुरस्कार

Best Original Song

2009 Slumdog Millionaire

फिल्मफेयर पुरस्कार

Best Lyricist

1977 Do diwane is shahar mein... Gharaonda

1979 Aanewala pal jaane wala hai... Gol Maal

1980 Hazaar raahen... Thodi Si Bewafaai

1983 Tujhse naaraz nahin zindagi... Masoom

1988 Mera kuch saamaan... Ijaazat

1991 Yaara sili sili... Lekin...

1998 Chhaiyya Chhaiyya... Dil Se

2003 Saathiya... Saathiya

Best Dialogue

1971 Anand

1973 Namak Haraam

1996 Maachis

2003 Saathiya

Best Story

1996 Maachis

Best Director

1976 Mausam

Best Feature Film (Critics)

1975 Aandhi

2002 Lifetime Achievement Award

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

Best Director

1976 Mausam

Best Lyricist

1988 Mera kuch saaman... Ijaazat

1991 Yaara sili sili... Lekin...

Best Film for Wholesome Entertainment

1996 Maachis

Best Screenplay

1972 Koshish

Best Documentary

1991 Ustad Amjad Ali Khan

1991 Pt Bhimsen Joshi

गुलज़ार नाम से प्रसिद्ध सम्पूर्ण सिंह कालरा (जन्म-१८ अगस्त १९३६)[1] हिन्दी फिल्मों के एक प्रसिद्ध गीतकार हैं। इसके अतिरिक्त वे एक कवि, पटकथा लेखक, फ़िल्म निर्देशक तथा नाटककार हैं। उनकी रचनाए मुख्यतः हिन्दी, उर्दू तथा पंजाबी में हैं, परन्तु ब्रज भाषा, खड़ी बोली, मारवाड़ी और हरियाणवी में भी इन्होने रचनाये की। गुलजार को वर्ष २००२ मे सहित्य अकादमी पुरस्कार और वर्ष २००४ मे भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला तीसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म भूषण से भी सम्मानित किया जा चुका है। वर्ष २००९ मे डैनी बॉयल निर्देशित फिल्म स्लम्डाग मिलियनेयर मे उनके द्वारा लिखे गीत जय हो के लिये उन्हे सर्वश्रेष्ठ गीत का ऑस्कर पुरस्कार पुरस्कार मिल चुका है। इसी गीत के लिये उन्हे ग्रैमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

प्रारम्भिक जीवन संपादित करें

गुलज़ार का जन्म भारत के झेलम जिला पंजाब के दीना गाँव में, जो अब पाकिस्तान में है, १८ अगस्त १९३६ को हुआ था। गुलज़ार अपने पिता की दूसरी पत्नी की इकलौती संतान हैं। उनकी माँ उन्हें बचपन मे ही छोड़ कर चल बसीं। माँ के आँचल की छाँव और पिता का दुलार भी नहीं मिला। वह नौ भाई-बहन में चौथे नंबर पर थे। बंट्वारे के बाद उनका परिवार अमृतसर (पंजाब, भारत) आकर बस गया, वहीं गुलज़ार साहब मुंबई चले गये। वर्ली के एक गेरेज में वे बतौर मेकेनिक काम करने लगे और खाली समय में कवितायें लिखने लगे। फ़िल्म इंडस्ट्री में उन्होंने बिमल राय, हृषिकेश मुख़र्जी और हेमंत कुमार के सहायक के तौर पर काम शुरू किया। बिमल राय की फ़िल्म बंदनी के लिए गुलज़ार ने अपना पहला गीत लिखा। गुलज़ार त्रिवेणी छन्द के सृजक हैं।

रचनात्मक लेखन संपादित करें

गुजराल द्वारा लिखे गए पुस्तकों की सूची-

चौरस रात (लघु कथाएँ, 1962)

जानम (कविता संग्रह, 1963)

एक बूँद चाँद (कविताएँ, 1972)

रावी पार (कथा संग्रह, 1997)

रात, चाँद और मैं (2002)

रात पश्मीने की

खराशें (2003)

चलचित्र सृजन संपादित करें

निर्देशन संपादित करें

गुलजार ने बतौर निर्देशक अपना सफर १९७१ में मेरे अपने से शुरू किया। १९७२ में आयी संजीव कुमार और जया भादुडी अभिनीत फिल्म कोशिश जो एक गूंगे बहरे दम्पति के जीवन पर आधारित कहानी थी, ने आलोचकों को भी हैरान कर दिया। इसके बाद गुलजार ने संजीव कुमार के साथ आंधी (१९७५), मौसम (1975), अंगूर (१९८१) और नमकीन (१९८२) जैसी फिल्मे निर्देशित की। गुलजार द्वारा निर्देशित चलचित्रों की सूची-

मेरे अपने (1971)

परिचय (1972)

कोशिश (1972)

अचानक (1973)

खुशबू (1974)

आँधी (1975)

मौसम (1976)

किनारा (1977)

किताब (1978)

अंगूर (1980)

नमकीन (1981)

मीरा

इजाजत (1986)

लेकिन (1990)

लिबास (1993)

माचिस (1996)

हु तू तू (1999)

गीत लेखन संपादित करें

गुलजार द्वारा लिखे गए गीतों वाले फिल्मों की सूची-

ओमकारा

रेनकोट

पिंजर

दिल से

आँधी

दूसरी सीता

इजाजत

पटकथा लेखन संपादित करें

आँधी (1975) - पटकथा, संवाद

मीरा (1979) - पटकथा, संवाद

पुरस्कार और सम्मान संपादित करें

फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ गीतकार - १९७७, १९७९, १९८०, १९८३, १९८८, १९८८, १९९१, १९९८, २००२, २००५

साहित्य अकादमी पुरस्कार २००२ में

पद्मभूषण - २००४ गुलज़ार को भारत सरकार द्वारा सन २००४ में कला क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। ये महाराष्ट्र राज्य से हैं।

ऑस्कर (सर्वश्रेष्ठ मौलिक गीत का) - २००९ में अंग्रेजी चलचित्र 'स्लमडॉग मिलियनेयर' के गीत 'जय हो' के लिए

ग्रैमी पुरस्कार- २०१० में।

दादा साहब फाल्के सम्मान - २०१३[2][3]

सन्दर्भ   संपादित करें

↑ हजार चेहरों वाले गुलज़ार

↑ "Gulzar to get Dadasaheb Phalke award [गुलज़ार को मिलेगा दादा साहब फाल्के पुरस्कार]" (अंग्रेज़ी में). इण्डिया टुडे डॉट इन (इण्डिया टुडे समूह). १२ अप्रैल २०१४. http://indiatoday.intoday.in/story/gulzar-to-get-dadasaheb-phalke-award/1/355422.html.

अभिगमन तिथि: १२ अप्रैल २०१४.

↑ "गुलज़ार को मिला दादा साहब फाल्के". बीबीसी हिन्दी. १२ अप्रैल २०१४. http://www.bbc.co.uk/hindi/india/2014/04/140412_gulzar_phalke_award_vt.shtml. अभिगमन तिथि: १२ अप्रैल २०१४.

बाहरी कड़ियाँसंपादित करें

गुलज़ार (कविता कोश)

इब्ने बतूता के जूते ने की गुलजार की फज़ीहत

इंटरनेट मूवी डेटाबेस पर गुलज़ार

====================================

तेरी आँखें हैं या सजदे में हैं मासूम नमाज़ी

पलकें खुलती हैं तो यूं गूँज के उठती है नज़र

जैसे मंदिर से जरस की चले नमनाक सदा

और झुकती हैं तो बस जैसे अज़ान ख़त्म हुई हो

==============================

मैं अपने होठों से चुन रहा हूँ तुम्हारी साँसों की आयतों को

कि जिस्म के इस हसीन काबे पे रूह सजदे बिछा रही है

==============================

तुम्हारे हाथों को चूमकर, छूके अपनी आँखों से आज मैंने

जो आयतें पढ़ नहीं सका, उनके लम्स महसूस कर लिए हैं

==============================

मैंने रखी हुई हैं आँखों पर

तेरी ग़मगीन-सी उदास आखें

जैसे गिरजे में रक्खी ख़ामोशी

जैसे रहलों पे रक्खी अन्जीलें

एक आंसू गिरा दो आँखों से

कोई आयत मिले नमाज़ी को

कोई हर्फ़-ए-कलाम-ए-पाक मिले

==============================

मैं उड़ते हुए पंछियों को डराता हुआ

कुचलता हुआ घास की कलगियाँ

गिराता हुआ गर्दनें इन दरख्तों की,छुपता हुआ

जिनके पीछे से

निकला चला जा रहा था वह सूरज

तआकुब में था उसके मैं

गिरफ्तार करने गया था उसे

जो ले के मेरी उम्र का एक दिन भागता जा रहा था

==============================

ज़िंदगी क्या है जानने के लिये

ज़िंदा रहना बहुत जरुरी है
आज तक कोई भी रहा तो नही

सारी वादी उदास बैठी है
मौसमे गुल ने खुदकशी कर ली
किसने बरुद बोया बागो मे

आओ हम सब पहन ले आइने
सारे देखेंगे अपना ही चेहरा
सारे हसीन लगेंगे यहाँ

है नही जो दिखाई देता है
आइने पर छपा हुआ चेहरा
तर्जुमा आइने का ठीक नही

हम को गलिब ने येह दुआ दी थी

तुम सलामत रहो हज़ार बरस

ये बरस तो फकत दिनो मे गया

लब तेरे मीर ने भी देखे है

पखुड़ी एक गुलाब की सी है

बात सुनते तो गलिब रो जाते

ऐसे बिखरे है रात दिन जैसे

मोतियो वाला हार टूट गया

तुमने मुझको पिरो के रखा था

================================

ज़रा पैलेट सम्भालो रंगोबू का

मैं कैनवास आसमां का खोलता हूं

बनाओ फिर से सूरत आदमी की!

साथ में एक और रंग बोनस में.. ईद के चाँद पर होली का रंग!

जहां नुमा एक होटल है नां...

जहां नुमा के पीछे एक टी.वी. टॉवर है नां...

चाँद को उसके ऊपर चढ़ते देखा था कल!

होली का दिन था

मुंह पर सारे रंग लगे थे

थोड़ी देर में ऊपर चढ़ के

टांग पे टांग जमा के ऐसे बैठ गया था,

होली की खबरों में लोग उसे भी जैसे

अब टी.वी. पर देख रहे होंगे!!

==============================

उसे फिर लौट कर जाना है ये मालूम था उस वक़्त भी

जब शाम की सुर्ख-ओ-सुनहरी रेत पर वो दौड़ती आई थी

और लहरा के यूँ आगोश में बिखरी थी

जैसे पूरा का पूरा समंदर ले के उमड़ी है

उसे जाना है वो भी जानती तो थी

मगर हर रात फिर भी हाथ रखकर चाँद पर खाते रहे कसमें

ना मैं उतरूँगा उस साँसों के साहिल से

ना वो उतरेगी मेरे आसमाँ पर झूलते तारों की पींगों से

मगर जब कहते कहते दास्ताँ, फिर वक़्त ने लम्बी जम्हाई ली

ना वो ठहरी, ना मैं ही रोक पाया था

बहुत फूँका सुलगते चाँद को,

फिर भी उसे इक इक कला घटते हुए देखा

बहुत खींचा समंदर को मगर साहिल तलक हम ला नहीं पाए

सहर के वक़्त, फिर उतरे हुए साहिल पे इक

डूबा हुआ, खाली समंदर था |

==============================

कदीम वजनी इमारतों में,

कुछ ऐसे रखा है, जैसे कागज पे बट्टा रख दें,

दबा दें, तारीख उड़ ना जाये,

मैं वक्त कैसे बयाँ करूँ, वक्त और क्या है?

कभी कभी वक्त यूँ भी लगता है मुझको

जैसे, गुलाम है!

आफ़ताब का एक दहकता गोला उठा के

हर रोज पीठ पर वह, फलक पर चढ़ता है चप्पा

चप्पा कदम जमाकर,

वह पूरा कोहसार पार कर के,

उतारता है, उफुक कि दहलीज़ पर दहकता

हुआ सा पत्थर,

टिका के पानी की पतली सुतली पे, लौट

जाता है अगले दिन का उठाने गोला ,

और उसके जाते ही

धीरे धीरे वह पूरा गोला निगल के बाहर निकलती है

रात, अपनी पीली सी जीभ खोले,

गुलाम है वक्त गर्दिशों का,

कि जैसे उसका गुलाम मैं हूँ !!

===============================

तुम्हारी फुर्कत में जो गुजरता है,

और फिर भी नहीं गुजरता,

मैं वक्त कैसे बयाँ करूँ , वक्त और क्या है?

कि वक्त बांगे जरस नहीं जो बता रहा है

कि दो बजे हैं,

कलाई पर जिस अकाब को बांध कर

समझता हूँ वक्त है,

वह वहाँ नहीं है!

वह उड़ चुका

जैसे रंग उड़ता है मेरे चेहरे का, हर तहय्युर पे,

और दिखता नहीं किसी को,

वह उड़ रहा है कि जैसे इस बेकराँ समंदर से

भाप उड़ती है

और दिखती नहीं कहीं भी,

==============================

वक्त की आँख पे पट्टी बांध के.

चोर सिपाही खेल रहे थे—

रात और दिन और चाँद और मैं—

जाने कैसे इस गर्दिश में अटका पाँव,

दूर गिरा जा कर मैं जैसे,

रौशनियों के धक्के से

परछाईं जमीं पर गिरती है!

धेय्या छोने से पहले ही—

वक्त ने चोर कहा और आँखे खोल के

मुझको पकड़ लिया—

================================

मैं उड़ते हुए पंछियों को डराता हुआ

कुचलता हुआ घास की कलगियाँ

गिराता हुआ गर्दनें इन दरख्तों की,छुपता हुआ

जिनके पीछे से

निकला चला जा रहा था वह सूरज

तआकुब में था उसके मैं

गिरफ्तार करने गया था उसे

जो ले के मेरी उम्र का एक दिन भागता जा रहा था

===============================

शहर में आदमी कोई भी नहीं क़त्ल हुआ,

नाम थे लोगों के जो, क़त्ल हुये.

सर नहीं काटा, किसी ने भी, कहीं पर कोई–

लोगों ने टोपियाँ काटी थीं कि जिनमें सर थे!

और ये बहता हुआ सुर्ख लहू है जो सड़क पर,

ज़बह होती हुई आवाजों की गर्दन से गिरा था

==================================

आग का पेट बड़ा है!

आग को चाहिए हर लहजा चबाने के लिये

खुश्क करारे पत्ते,

आग कर लेती है तिनकों पे गुजारा लेकिन–

आशियानों को निगलती है निवालों की तरह,

आग को सब्ज हरी टहनियाँ अच्छी नहीं लगतीं,

ढूंढती है, कि कहीं सूखे हुये जिस्म मिलें!

उसको जंगल कि हवा रास बहुत है फिर भी,

अब गरीबों कि कई बस्तियों पर देखा है हमला करते,

आग अब मंदिरों-मस्जिद की गजा खाती है!

लोगों के हाथों में अब आग नहीं–

आग के हाथों में कुछ लोग हैं अब

====================================

बुरा लगा तो होगा ऐ खुदा तुझे,

दुआ में जब,

जम्हाई ले रहा था मैं–

दुआ के इस अमल से थक गया हूँ मैं !

मैं जब से देख सुन रहा हूँ,

तब से याद है मुझे,

खुदा जला बुझा रहा है रात दिन,

खुदा के हाथ में है सब बुरा भला–

दुआ करो !

अजीब सा अमल है ये

ये एक फ़र्ज़ी गुफ़्तगू,

और एकतरफ़ा–एक ऐसे शख्स से,

ख़याल जिसकी शक्ल है

ख़याल ही सबूत है.

मैं दीवार की इस जानिब हूँ .

इस जानिब तो धूप भी है हरियाली भी !

ओस भी गिरती है पत्तों पर,

आ जाये तो आलसी कोहरा,

शाख पे बैठा घंटों ऊँघता रहता है.

बारिश लम्बी तारों पर नटनी की तरह थिरकती,

आँखों से गुम हो जाती है,

जो मौसम आता है,सारे रस देता है !

लेकिन इस कच्ची दीवार की दूसरी जानिब,

क्यों ऐसा सन्नाटा है

कौन है जो आवाज नहीं करता लेकिन–

दीवार से टेक लगाए बैठा रहता है.

पिछली बार मिला था जब मैं

एक भयानक जंग में कुछ मशरूफ़ थे तुम

नए नए हथियारों की रौनक से काफ़ी खुश लगते थे

इससे पहले अन्तुला में

भूख से मरते बच्चों की लाश दफ्नाते देखा था

और एक बार ...एक और मुल्क में जलजला देखा

कुछ शहरों के शहर गिरा के दूसरी जानिब

लौट रहे थे

तुम को फलक से आते भी देखा था मैंने

आस पास के सय्यारों पर धूल उड़ाते

कूद फलांग के दूसरी दुनियाओं की गर्दिश

तोड़ ताड़ के गेलेक्सीज के महवर तुम

जब भी जमीं पर आते हो

भोंचाल चलाते और समंदर खौलाते हो

बड़े 'इरेटिक' से लगते हो

काएनात में कैसे लोगों की सोहबत में रहते हो तुम

———————————,———————————

पूरे का पूरा आकाश घुमा कर बाज़ी देखी मैंने–

काले घर में सूरज रख के,

तुमने शायद सोचा था, मेरे सब मोहरे पिट जायेंगे,

मैंने एक चिराग जला कर,

अपना रास्ता खोल लिया

तुमने एक समंदर हाथ में लेकर, मुझ पर ढेल दिया
मैंने नूह की कश्ती उसके ऊपर रख दी
काल चला तुमने, और मेरी जानिब देखा
मैंने काल को तोड़ के लम्हा लम्हा जीना सीख लिया

मेरी खुदी को तुमने चंद चमत्कारों से मारना चाहा
मेरे एक प्यादे ने तेरा चाँद का मोहरा मार लिया –

मौत की शह देकर तुमने समझा था अब तो मात हुई
मैंने जिस्म का खोल उतर के सौंप दिया –और
रूह बचा ली

पूरे का पूरा आकाश घुमा कर अब तुम देखो बाजी
———————————————,
बस चन्द करोड़ों सालों में

सूरज की आग बुझेगी जब

और राख उड़ेगी सूरज से

जब कोई चाँद न डूबेगा

और कोई जमीं न उभरेगी

तब ठंढा बुझा इक कोयला सा

टुकड़ा ये जमीं का घूमेगा

भटका भटका

मद्धम खकिसत्री रोशनी में !

मैं सोचता हूँ उस वक्त अगर

कागज़ पे लिखी इक नज़्म कहीं उड़ते उड़ते

सूरज में गिरे

तो सूरज फिर से जलने लगे !!

अपने"सन्तूरी"सितारे से अगर बात करूं

तह-ब-तह छील के आफ़ाक़ कि पर्तें

कैसे पहुंचेगी मेरी बात ये अफ़लाक के उस पर भला ?

कम से कम “नूर की रफ़्तार”से भी जाए अगर

एक सौ सदियाँ तो ख़ामोश ख़लाओं से गुजरने में लगेंगी

कोई माद्दा है मेरी बात में तो

“नून”के नुक्ते सी रह जाएगी “ब्लैक होल”गुजर के

क्या वो समझेगा?

मैं समझाऊंगा क्या ?

—————————————,———,————————

बहुत बौना है ये सूरज ....!

हमारी कहकशाँ की इस नवाही सी ‘गैलेक्सी’में

बहुत बौना सा ये सूरज जो रौशन है...

ये मेरी कुल हदों तक रौशनी पहुँचा नहीं पाता

मैं मार्ज़ और जुपिटर से जब गुजरता हूँ

भँवर से,ब्लैक होलों के

मुझे मिलते हैं रस्ते में

सियह गिर्दाब चकराते ही रहते हैं

मसल के जुस्तजु के नंगे सहराओं में वापस

फेंक देते हैं

जमीं से इस तरह बाँधा गया हूँ मैं

गले से ग्रैविटी का दायमी पट्टा नहीं खुलता !

रात में जब भी मेरी आँख खुले

नंगे पाँव ही निकल जाता हूँ

कहकशाँ छू के निकलती है जो इक पगडंडी

अपने पिछवाड़े के "सन्तुरी" सितारे की तरफ़

दूधिया तारों पे पाँव रखता

चलता रहता हूँ यही सोच के मैं

कोई सय्यारा अगर जागता मिल जाए कहीं

इक पड़ोसी की तरह पास बुला ले शायद

और कहे

आज की रात यहीं रह जाओ

तुम जमीं पर हो अकेले

मैं यहाँ तन्हा हूँ।

उसे फिर लौट कर जाना है ये मालूम था उस वक़्त भी
जब शाम की सुर्ख-ओ-सुनहरी रेत पर वो दौड़ती आई थी
और लहरा के यूँ आगोश में बिखरी थी
जैसे पूरा का पूरा समंदर ले के उमड़ी है
उसे जाना है वो भी जानती तो थी
मगर हर रात फिर भी हाथ रखकर चाँद पर खाते रहे कसमें
ना मैं उतरूँगा उस साँसों के साहिल से
ना वो उतरेगी मेरे आसमाँ पर झूलते तारों की पींगों से
मगर जब कहते कहते दास्ताँ, फिर वक़्त ने लम्बी जम्हाई ली
ना वो ठहरी, ना मैं ही रोक पाया था
बहुत फूँका सुलगते चाँद को,
फिर भी उसे इक इक कला घटते हुए देखा
बहुत खींचा समंदर को मगर साहिल तलक हम ला नहीं पाए
सहर के वक़्त, फिर उतरे हुए साहिल पे इक

डूबा हुआ, खाली समंदर था।

हम को मन की शक्ति देना, मन विजय करें
दूसरो की जय से पहले, ख़ुद को जय करें।

भेद भाव अपने दिल से साफ कर सकें
दोस्तों से भूल हो तो माफ़ कर सके
झूठ से बचे रहें, सच का दम भरें
दूसरो की जय से पहले ख़ुद को जय करें
हमको मन की शक्ति देना।

मुश्किलें पड़े तो हम पे, इतना कर्म कर
साथ दें तो धर्म का चलें तो धर्म पर
ख़ुद पर हौसला रहें बदी से न डरें
दूसरों की जय से पहले ख़ुद को जय करें
हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें।

मुझे खर्ची में पूरा एक दिन, हर रोज़ मिलता है

मगर हर रोज़ कोई छीन लेता है,

झपट लेता है, अंटी से

कभी खीसे से गिर पड़ता है तो गिरने की

आहट भी नहीं होती,

खरे दिन को भी खोटा समझ के भूल जाता हूँ मैं

गिरेबान से पकड़ कर मांगने वाले भी मिलते हैं

"तेरी गुजरी हुई पुश्तों का कर्जा है, तुझे किश्तें चुकानी है "

ज़बरदस्ती कोई गिरवी रख लेता है, ये कह कर

अभी 2-4 लम्हे खर्च करने के लिए रख ले,

बकाया उम्र के खाते में लिख देते हैं,

जब होगा, हिसाब होगा

बड़ी हसरत है पूरा एक दिन इक बार मैं

अपने लिए रख लूं,

तुम्हारे साथ पूरा एक दिन

बस खर्च

करने की तमन्ना है !!

रात चुपचाप दबे पाँव चली जाती है

रात ख़ामोश है रोती नहीं हँसती भी नहीं

कांच का नीला सा गुम्बद है, उड़ा जाता है

ख़ाली-ख़ाली कोई बजरा सा बहा जाता है

चाँद की किरणों में वो रोज़ सा रेशम भी नहीं

चाँद की चिकनी डली है कि घुली जाती है

और सन्नाटों की इक धूल सी उड़ी जाती है

काश इक बार कभी नींद से उठकर तुम भी

हिज्र की रातों में ये देखो तो क्या होता है

देखो, आहिस्ता चलो, और भी आहिस्ता ज़रा

देखना, सोच-सँभल कर ज़रा पाँव रखना,

ज़ोर से बज न उठे पैरों की आवाज़ कहीं.

काँच के ख़्वाब हैं बिखरे हुए तन्हाई में,

ख़्वाब टूटे न कोई, जाग न जाये देखो,

जाग जायेगा कोई ख़्वाब तो मर जाएगा

पूरे का पूरा आकाश घुमा कर बाज़ी देखी मैंने

काले घर में सूरज रख के,

तुमने शायद सोचा था, मेरे सब मोहरे पिट जायेंगे,

मैंने एक चिराग़ जला कर,

अपना रस्ता खोल लिया.

तुमने एक समन्दर हाथ में ले कर, मुझ पर ठेल दिया।

मैंने नूह की कश्ती उसके ऊपर रख दी,

काल चला तुमने और मेरी जानिब देखा,

मैंने काल को तोड़ क़े लम्हा-लम्हा जीना सीख लिया.

मेरी ख़ुदी को तुमने चन्द चमत्कारों से मारना चाहा,

मेरे इक प्यादे ने तेरा चाँद का मोहरा मार लिया

मौत की शह दे कर तुमने समझा अब तो मात हुई,

मैंने जिस्म का ख़ोल उतार क़े सौंप दिया,

और रूह बचा ली,

पूरे-का-पूरा आकाश घुमा कर अब तुम देखो बाज़ी।

इक इमारत

है सराय शायद,

जो मेरे सर में बसी है.

सीढ़ियाँ चढ़ते-उतरते हुए जूतों की धमक,

बजती है सर में

कोनों-खुदरों में खड़े लोगों की सरगोशियाँ,

सुनता हूँ कभी

साज़िशें, पहने हुए काले लबादे सर तक,

उड़ती हैं, भूतिया महलों में उड़ा करती हैं

चमगादड़ें जैसे

इक महल है शायद!

साज़ के तार चटख़ते हैं नसों में

कोई खोल के आँखें,

पत्तियाँ पलकों की झपकाके बुलाता है किसी को!

चूल्हे जलते हैं तो महकी हुई 'गन्दुम' के धुएँ में,

खिड़कियाँ खोल के कुछ चेहरे मुझे देखते हैं!

और सुनते हैं जो मैं सोचता हूँ !

एक, मिट्टी का घर है

इक गली है, जो फ़क़त घूमती ही रहती है

शहर है कोई, मेरे सर में बसा है शायद!

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो, कि दास्ताँ आगे और भी है

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो!

अभी तो टूटी है कच्ची मिट्टी, अभी तो बस जिस्म ही गिरे हैं

अभी तो किरदार ही बुझे हैं

अभी सुलगते हैं रूह के ग़म, अभी धड़कते हैं दर्द दिल के

अभी तो एहसास जी रहा है

यह लौ बचा लो जो थक के किरदार की हथेली से गिर पड़ी है

यह लौ बचा लो यहीं से उठेगी जुस्तजू फिर बगूला बनकर,

यहीं से उठेगा कोई किरदार फिर इसी रोशनी को लेकर,

कहीं तो अंजाम-ओ-जुस्तजू के सिरे मिलेंगे,

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो!

एक बौछार था वो शख्स,

बिना बरसे किसी अब्र की सहमी सी नमी से

जो भिगो देता था...

एक बोछार ही था वो,

जो कभी धूप की अफशां भर के

दूर तक, सुनते हुए चेहरों पे छिड़क देता था

नीम तारीक से हॉल में आंखें चमक उठती थीं

सर हिलाता था कभी झूम के टहनी की तरह,

लगता था झोंका हवा का था कोई छेड़ गया है

गुनगुनाता था तो खुलते हुए बादल की तरह

मुस्कराहट में कई तरबों की झनकार छुपी थी

गली क़ासिम से चली एक ग़ज़ल की झनकार था वो

एक आवाज़ की बौछार था वो!!

खाली कागज़ पे क्या तलाश करते हो?

एक ख़ामोश-सा जवाब तो है।

डाक से आया है तो कुछ कहा होगा

"कोई वादा नहीं... लेकिन

देखें कल वक्त क्या तहरीर करता है!"

या कहा हो कि... "खाली हो चुकी हूँ मैं

अब तुम्हें देने को बचा क्या है?"

सामने रख के देखते हो जब

सर पे लहराता शाख का साया

हाथ हिलाता है जाने क्यों?

कह रहा हो शायद वो...

"धूप से उठके दूर छाँव में बैठो!"

सामने रौशनी के रख के देखो तो

सूखे पानी की कुछ लकीरें बहती हैं

"इक ज़मीं दोज़ दरया, याद हो शायद

शहरे मोहनजोदरो से गुज़रता था!"

उसने भी वक्त के हवाले से

उसमें कोई इशारा रखा हो... या

उसने शायद तुम्हारा खत पाकर

सिर्फ इतना कहा कि, लाजवाब हूँ मैं!

न आने की आहट न जाने की टोह मिलती है

कब आते हो कब जाते हो

इमली का ये पेड़ हवा में हिलता है तो

ईंटों की दीवार पे परछाई का छीटा पड़ता है

और जज़्ब हो जाता है,

जैसे सूखी मिटटी पर कोई पानी का कतरा फेंक गया हो

धीरे धीरे आँगन में फिर धूप सिसकती रहती है

कब आते हो, कब जाते हो

बंद कमरे में कभी-कभी जब दीये की लौ हिल जाती है तो

एक बड़ा सा साया मुझको घूँट घूँट पीने लगता है

आँखें मुझसे दूर बैठकर मुझको देखती रहती है

कब आते हो कब जाते हो

दिन में कितनी-कितनी बार मुझको - तुम याद आते हो

---

(1)

जब भी यह दिल उदास होता है

जाने कौन आस-पास होता है

होंठ चुपचाप बोलते हों जब
सांस कुछ तेज़-तेज़ चलती हो
आंखें जब दे रही हों आवाज़ें
ठंडी आहों में सांस जलती हो

आँख में तैरती हैं तसवीरें
तेरा चेहरा तेरा ख़याल लिए
आईना देखता है जब मुझको
एक मासूम सा सवाल लिए

कोई वादा नहीं किया लेकिन
क्यों तेरा इंतजार रहता है
बेवजह जब क़रार मिल जाए
दिल बड़ा बेकरार रहता है

जब भी यह दिल उदास होता है

जाने कौन आस-पास होता है

(2)

हाल-चाल ठीक-ठाक है

सब कुछ ठीक-ठाक है

बी.ए. किया है, एम.ए. किया

लगता है वह भी ऐंवे किया

काम नहीं है वरना यहाँ

आपकी दुआ से सब ठीक-ठाक है

आबो-हवा देश की बहुत साफ़ है

क़ायदा है, क़ानून है, इंसाफ़ है

अल्लाह-मियाँ जाने कोई जिए या मरे

आदमी को खून-वून सब माफ़ है

और क्या कहूं?
छोटी-मोटी चोरी, रिश्वतखोरी
देती है अपा गुजारा यहाँ
आपकी दुआ से बाक़ी ठीक-ठाक है

गोल-मोल रोटी का पहिया चला
पीछे-पीछे चाँदी का रुपैया चला
रोटी को बेचारी को चील ले गई
चाँदी ले के मुँह काला कौवा चला

और क्या कहूं?
मौत का तमाशा, चला है बेतहाशा
जीने की फुरसत नहीं है यहाँ
आपकी दुआ से बाक़ी ठीक-ठाक है
हाल-चाल ठीक-ठाक है

(3)

अ-आ, इ-ई, अ-आ, इ-ई

मास्टर जी की आ गई चिट्ठी

चिट्ठी में से निकली बिल्ली

बिल्ली खाए जर्दा-पान

काला चश्मा पीले कान

कान में झुमका, नाक में बत्ती

हाथ में जलती अगरबत्ती

अगर हो बत्ती कछुआ छाप

आग में बैठा पानी ताप

ताप चढ़े तो कम्बल तान

वी.आई.पी. अंडरवियर-बनियान

अ-आ, इ-ई, अ-आ, इ-ई

मास्टर जी की आ गई चिट्ठी

चिट्ठी में से निकला मच्छर

मच्छर की दो लंबी मूँछें

मूँछ पे बाँधे दो-दो पत्थर

पत्थर पे इक आम का झाड़

पूंछ पे लेके चले पहाड़

पहाड़ पे बैठा बूढ़ा जोगी

जोगी की इक जोगन होगी

-गठरी में लागा चोर

मुसाफिर देख चाँद की ओर

पहाड़ पै बैठा बूढ़ा जोगी

जोगी की एक जोगन होगी

जोगन कूटे कच्चा धान

वी.आई.पी. अंडरवियर बनियान

अ-आ, इ-ई, अ-आ, इ-ई

मास्टर जी की आ गई चिट्ठी

चिट्ठी में से निकला चीता

थोड़ा काला थोड़ा पीला

चीता निकला है शर्मीला

घूँघट डालके चलता है

मांग में सेंदुर भरता है

माथे रोज लगाए बिंदी

इंगलिश बोले मतलब हिंदी

'इफ' अगर 'इज' है, 'बट' पर

'व्हॉट' माने क्या

इंगलिश में अलजेब्रा छान

वी.आई.पी. अंडरवियर-बनियान

काली काली आँखों का

काला काला जादू है

आधा आधा तुझ बिन मैं

आधी आधी सी तू है

काली काली आँखों का

काला काला जादू है

आज भी जुनूनी सी

जो एक आरज़ू है

यूँ ही तरसने दे

यह आँखें बरसने दे

तेरी आँखें दो आँखें

कभी शबनम कभी खुशबू है

काली काली आँखों का

काला काला जादू है

आधा आधा तुझ बिन मैं

आधी आधी सी तू है

[काली काली आँखों काला काला जादू]

गहरे समंदर और दो जज़ीरे

डूबे हुए हैं कितने ज़खीरे

ढूँढने दो अश्कों के मोती

सीपी से खोलो

पलकों से झांके तो झाँकने दो

कतरा कतरा गिनने दो

कतरा कतरा चुनने दो

कतरा कतरा रखना है ना

कतरा कतरा रखने दो

तेरी आँखों का यह साया

अँधेरे में कोई जुगनू है

काली काली आँखों का

काला काला जादू है

आधा आधा तुझ बिन मैं

आधी आधी सी तू है

जाने कहाँ पे बदलेंगे दोनों

उड़ते हुए यह शब के परिंदे

पलकों पे बैठा ले के उड़े हैं

दो बूँद दे दो प्यासे पड़े हैं

हाँ दो बूँदें

लम्हा लम्हा लम्हे दो

लम्हा लम्हा जीने दो

कह भी दो ना आँखों से

लम्हा लम्हा पीने दो

तेरी आँखें हल्का सा

छलका सा एक आंसू है

काली काली आँखों का

काला काला जादू है

आधा आधा तुझ बिन मैं

आधी आधी सी तू है

काली काली आँखों का

काला काला जादू है

रोको मत टोको मत

सोचने दो इन्हें सोचने दो

रोको मत टोको मत

होए टोको मत इन्हें सोचने दो

मुश्किलों के हल खोजने दो

रोको मत टोको मत

निकलने तो दो आसमां से जुड़ेंगे

अरे अंडे के अन्दर ही कैसे उड़ेंगे यार

निकालने दो पाँव जुराबें बहुत हैं
किताबों के बाहर किताबें बहुत हैं

एक देहाती सर पे गुड की भेली बांधे,
लम्बे- चौडे एक मैदा से गुज़र रहा था
गुड की खुशबु सुनके भिन-भिन करती
एक छतरी सर पे मंडलाती थी
धूप चढ़ती और सूरज की गर्मी पहुची तो
गुड की भेली बहने लगी

मासूम देहाती हैरा था
माथे से मीठे-मीठे कतरे गिरते थे
और वो जीभ से चाट रहा था!

मै देहाती.........

मेरे सर पर ये टैगोर की कविता की भेली किसने रख दी!

बस एक चुप सी लगी है, नहीं उदास नहीं!

कहीं पे सांस रुकी है!

नहीं उदास नहीं, बस एक चुप सी लगी है!!

कोई अनोखी नहीं, ऐसी ज़िन्दगी लेकिन!

खूब न हो, मिली जो खूब मिली है!

नहीं उदास नहीं, बस एक चुप सी लगी है!!

सहर भी ये रात भी, दोपहर भी मिली लेकिन!

हमीने शाम चुनी, हमीने शाम चुनी है!

नहीं उदास नहीं, बस एक चुप सी लगी है!!

वो दासतां जो, हमने कही भी, हमने लिखी!

आज वो खुद से सुनी है!

नहीं उदास नहीं, बस एक चुप सी लगी है!!

चौदहवीं रात के इस चाँद तले

सुरमई रात में साहिल के क़रीब

दूधिया जोड़े में आ जाए जो तू

ईसा के हाथ से गिर जाए सलीब

बुद्ध का ध्यान चटख जाए ,कसम से

तुझ को बर्दाश्त न कर पाए खुदा भी

दूधिया जोड़े में आ जाए जो तू

चौदहवीं रात के इस चाँद तले !

सितारे लटके हुए हैं तागों से आस्माँ पर

चमकती चिंगारियाँ-सी चकरा रहीं आँखों की पुतलियों में

नज़र पे चिपके हुए हैं कुछ चिकने-चिकने से रोशनी के धब्बे

जो पलकें मूँदूँ तो चुभने लगती हैं रोशनी की सफ़ेद किरचें

मुझे मेरे मखमली अँधेरों की गोद में डाल दो उठाकर

चटकती आँखों पे घुप्प अँधेरों के फाए रख दो

यह रोशनी का उबलता लावा न अन्धा कर दे ।

पूरे का पूरा आकाश घुमा कर बाज़ी देखी मैने,

पूरे का पूरा आकाश घुमा कर बाज़ी देखी मैने

काले घर में सूरज चलके, तुमने शायद सोचा था

मेरे सब मोहरे पिट जायेंगे.

मैने एक चराग जलाकर रोशनी कर ली,

अपना रस्ता खोल लिया

तुमने एक समन्दर हाथ में लेकर मुझपे ढेल दिया,

मैने नोह की कश्ति उस के ऊपर रख दी

काल चला तुमने और मेरी जानिब देखा,

काल चला तुमने और मेरी जानिब देखा

मैने काल को तोड़कर,

लम्हा लम्हा जीना सीख लिया

मेरी खुदी को मारना चाहा

तुमने चन्द चमत्कारों से

मेरी खुदी को मारना चाहा तुमने

चन्द चमत्कारों से

और मेरे एक प्यादे ने चलते चलते

तेरा चांद का मोहरा मार लिया

मौत की शह देकर तुमने समझा था अब

तो मात हुई

मौत की शह देकर तुमने समझा था अब

तो मात हुई

मैने जिस्म का खोल उतारकर सौंप दिया,
और रूह बचा ली

पूरे का पूरा आकाश घुमा कर अब
तुम देखो बाज़ी...

ज़िंदगी यूँ हुई बसर तन्हा
क़ाफिला साथ और सफ़र तन्हा

अपने साये से चौंक जाते हैं
उम्र गुज़री है इस क़दर तन्हा

रात भर बोलते हैं सन्नाटे
रात काटे कोई किधर तन्हा

दिन गुज़रता नहीं है लोगों में

रात होती नहीं बसर तन्हा

हमने दरवाज़े तक तो देखा था

फिर न जाने गए किधर तन्हा

==============================

.ख़ुमानी, अख़रोट बहुत दिन पास रहे थे

दोनों के जब अक़्स पड़ा करते थे बहते दरिया में,

पेड़ों की पोशाकें छोड़के,

नंग-धड़ंग दोनों दिन भर पानी में तैरा करते थे

कभी-कभी तो पार का छोर भी छू आते थे

.ख़ुमानी मोटी थी और अख़रोट का क़द कुछ ऊँचा था

भँवर कोई पीछे पड़ जाए, तो पत्थर की आड़ से होकर,

अख़रोट का हाथ पकड़ के वापस भाग आती थी।

अख़रोट बहुत समझाता था,

"देख ख़ुमानी, भँवर के चक्कर में मत पड़ना,

पाँव तले की मिट्टी खेंच लिया करता है।"

इक शाम बहुत पानी आया तुग़यानी का,

और एक भँवर...

ख़ुमानी को पाँव से उठाकर, तुग़यानी में कूद गया।

अख़रोट अब भी उस जानिब देखा करता है,

जिस जानिब दरिया बहता है।

अख़रोट का क़द कुछ सहम गया है

उसका अक़्स नहीं पड़ता अब पानी में!

================================

खिड़की पिछवाड़े को खुलती तो नज़र आता था

वो अमलतास का इक पेड़, ज़रा दूर, अकेला-सा खड़ा था

शाखें पंखों की तरह खोले हुए

एक परिन्दे की तरह

बरगलाते थे उसे रोज़ परिन्दे आकर

सब सुनाते थे वि परवाज़ के क़िस्से उसको

और दिखाते थे उसे उड़ के, क़लाबाज़ियाँ खा के

बदलियाँ छू के बताते थे, मज़े ठंडी हवा के!

आंधी का हाथ पकड़ कर शायद

उसने कल उड़ने की कोशिश की थी

औंधे मुँह बीच-सड़क आके गिरा है!!

==============================

मोड़ पे देखा है वो बूढ़ा-सा इक आम का पेड़ कभी?

मेरा वाकिफ़ है बहुत सालों से, मैं जानता हूँ

जब मैं छोटा था तो इक आम चुराने के लिए

परली दीवार से कंधों पे चढ़ा था उसके

जाने दुखती हुई किस शाख से मेरा पाँव लगा

धाड़ से फेंक दिया था मुझे नीचे उसने

मैंने खुन्नस में बहुत फेंके थे पत्थर उस पर
मेरी शादी पे मुझे याद है शाखें देकर
मेरी वेदी का हवन गरम किया था उसने
और जब हामला थी बीबा, तो दोपहर में हर दिन
मेरी बीवी की तरफ़ कैरियाँ फेंकी थी उसी ने

वक़्त के साथ सभी फूल, सभी पत्ते गए

तब भी लजाता था जब मुन्ने से कहती बीबा
'हाँ उसी पेड़ से आया है तू, पेड़ का फल है।'

अब भी लजाता हूँ, जब मोड़ से गुज़रता हूँ
खाँस कर कहता है,"क्यूँ, सर के सभी बाल गए?"

सुबह से काट रहे हैं वो कमेटी वाले
मोड़ तक जाने की हिम्मत नहीं होती मुझको!

=============================

कभी कभी लैम्प पोस्ट के नीचे कोई लड़का

दबा के पैन्सिल को उंगलियों में

मुड़े-तुड़े काग़ज़ों को घुटनों पे रख के

लिखता हुआ नज़र आता है कहीं तो..

ख़याल होता है, गोर्की है!

पजामे उचके ये लड़के जिनके घरों में बिजली नहीं लगी है

जो म्यूनिसपैल्टी के पार्क में बैठ कर पढ़ा करते हैं किताबें

डिकेन्स के और हार्डी के नॉवेल से गिर पड़े हैं...

या प्रेमचन्द की कहानियों का वर्क है कोई, चिपक गया है

समय पलटता नहीं वहां से

कहानी आगे बढ़ती नहीं है... और कहानी रुकी हुई है।

ये गर्मियाँ कितनी फीकी होती हैं - बेस्वादी।

हथेली पे लेके दिन की फक्की

मैं फाँक लेता हूं...और निगलता हूं रात के ठन्डे घूंट पीकर

ये सूखा सत्तू हलक से नीचे नहीं उतरता

ये खुश्क़ दिन एक गर्मियों का

जस भरी रात गर्मियों की

=================================

कोई मेला लगा है परबत पर

सब्ज़ाज़ारों पर चढ़ रहे हैं लोग

टोलियाँ कुछ रुकी हुईं ढलानों पर

दाग़ लगते हैं इक पके फल पर

दूर सीवन उधेड़ती-चढ़ती,

एक पगडंडी बढ़ रही है सब्ज़े पर !

चूंटियाँ लग गई हैं इस पहाड़ी को

जैसे अमरूद सड़ रहा है कोई !

==============================

दूर सुनसान-से साहिल के क़रीब

एक जवाँ पेड़ के पास

उम्र के दर्द लिए वक़्त मटियाला दोशाला ओढ़े

बूढ़ा-सा पाम का इक पेड़, खड़ा है कब से

सैकड़ों सालों की तन्हाई के बद

झुक के कहता है जवाँ पेड़ से... 'यार!

तन्हाई है ! कुछ बात करो !'

==============================

वो जो शायर था चुप-सा रहता था

बहकी-बहकी-सी बातें करता था

आँखें कानों पे रख के सुनता था

गूँगी खामोशियों की आवाज़ें!

जमा करता था चाँद के साए

और गीली- सी नूर की बूँदें

रूखे-रूखे- से रात के पत्ते

ओक में भर के खरखराता था

वक़्त के इस घनेरे जंगल में

कच्चे-पक्के से लम्हे चुनता था

हाँ वही, वो अजीब- सा शायर

रात को उठ के कोहनियों के बल

चाँद की ठोड़ी चूमा करता था

चाँद से गिर के मर गया है वो

लोग कहते हैं ख़ुदकुशी की है।

==============================

रात भर सर्द हवा चलती रही

रात भर हमने अलाव तापा

मैंने माजी से कई खुश्क सी शाखें काटीं

तुमने भी गुजरे हुये लम्हों के पत्ते तोड़े

मैंने जेबों से निकालीं सभी सूखीं नज़्में

तुमने भी हाथों से मुरझाये हुये खत खोलें

अपनी इन आंखों से मैंने कई मांजे तोड़े

और हाथों से कई बासी लकीरें फेंकी

तुमने पलकों पे नामी सूख गयी थी, सो गिरा दी।

रात भर जो भी मिला उगते बदन पर हमको

काट के दाल दिया जलाते अलावों मसं उसे

रात भर फून्कों से हर लोऊ को जगाये रखा

और दो जिस्मों के ईंधन को जलाए रखा

रात भर बुझते हुए रिश्ते को तापा हमने |

==============================

खुशबू जैसे लोग मिले अफ़साने में

एक पुराना खत खोला अनजाने में

जाना किसका ज़िक्र है इस अफ़साने में

दर्द मज़े लेता है जो दुहराने में

शाम के साये बालिस्तों से नापे हैं

चाँद ने कितनी देर लगा दी आने में

रात गुज़रते शायद थोड़ा वक्त लगे

ज़रा सी धूप दे उन्हें मेरे पैमाने में

दिल पर दस्तक देने ये कौन आया है

किसकी आहट सुनता है वीराने मे ।

============================

मौत तू एक कविता है

मुझसे एक कविता का वादा है मिलेगी मुझको

डूबती नब्ज़ों में जब दर्द को नींद आने लगे

ज़र्द सा चेहरा लिये जब चांद उफक तक पहुँचे

दिन अभी पानी में हो, रात किनारे के करीब

ना अंधेरा ना उजाला हो, ना अभी रात ना दिन

जिस्म जब ख़त्म हो और रूह को जब साँस आऐ

मुझसे एक कविता का वादा है मिलेगी मुझको

==============================

चिपचिपे दूध से नहलाते हैं, आंगन में खड़ा कर के तुम्हें

शहद भी, तेल भी, हल्दी भी, ना जाने क्या क्या

घोल के सर पे लुढ़काते हैं गिलासियाँ भर के

औरतें गाती हैं जब तीव्र सुरों में मिल कर

पाँव पर पाँव लगाए खड़े रहते हो

इक पथराई सी मुस्कान लिए

बुत नहीं हो तो परेशानी तो होती होगी

जब धुआँ देता, लगातार पुजारी

घी जलाता है कई तरह के छौंके देकर

इक जरा छींक ही दो तुम

तो यकीं आए कि सब देख रहे हो

==============================

वो ख़त के पुरज़े उड़ा रहा था

हवाओं का रुख़ दिखा रहा था

कुछ और भी हो गया नुमायाँ

मैं अपना लिखा मिटा रहा था

उसी का इमान बदल गया है

कभी जो मेरा ख़ुदा रहा था

वो एक दिन एक अजनबी को

मेरी कहानी सुना रहा था

वो उम्र कम कर रहा था मेरी

मैं साल अपने बढ़ा रहा था

==============================

कुरान हाथों में लेके नाबीना एक नमाज़ी

लबों पे रखता था

दोनों आँखों से चूमता था

झुकाके पेशानी यूँ अक़ीदत से छू रहा था

जो आयतें पढ़ नहीं सका

उन के लम्स महसूस कर रहा हो

मैं हैराँ-हैराँ गुज़र गया था
मैं हैराँ हैराँ ठहर गया हूँ

तुम्हारे हाथों को चूम कर
छू के अपनी आँखों से आज मैं ने
जो आयतें पढ़ नहीं सका
उन के लम्स महसूस कर लिये हैं

============================

बस एक चुप-सी लगी है, नहीं उदास नहीं
कहीं पे साँस रुकी है, नहीं उदास नहीं

कोई अनोखी नहीं ऐसी ज़िंदगी लेकिन

मिली जो, ख़ूब मिली है, नहीं उदास नहीं

सहर भी, रात भी, दोपहर भी मिली लेकिन

हमीं ने शाम चुनी है, नहीं उदास नहीं

बस एक चुप-सी लगी है, नहीं उदास नहीं

कहीं पे साँस रुकी है, नहीं उदास नहीं।

==============================

शाम से आँख में नमी सी है

आज फिर आप की कमी सी है

दफ़्न कर दो हमें कि साँस मिले

नब्ज़ कुछ देर से थमी सी है

वक़्त रहता नहीं कहीं थमकर

इस की आदत भी आदमी सी है

कोई रिश्ता नहीं रहा फिर भी

एक तस्लीम लाज़मी सी है

===========================

साँस लेना भी कैसी आदत है

जीये जाना भी क्या रवायत है

कोई आहट नहीं बदन में कहीं

कोई साया नहीं है आँखों में

पाँव बेहिस हैं, चलते जाते हैं

इक सफ़र है जो बहता रहता है

कितने बरसों से, कितनी सदियों से

जिये जाते हैं, जिये जाते हैं

आदतें भी अजीब होती हैं

===========================

क़दम उसी मोड़ पर जमे हैं

नज़र समेटे हुए खड़ा हूँ

जुनूँ ये मजबूर कर रहा है पलट के देखूँ

ख़ुदी ये कहती है मोड़ मुड़ जा

अगरचे एहसास कह रहा है

खुले दरीचे के पीछे दो आँखें झाँकती हैं

अभी मेरे इंतज़ार में वो भी जागती है

कहीं तो उस के गोशा-ए-दिल में दर्द होगा

उसे ये ज़िद है कि मैं पुकारूँ

मुझे तक़ाज़ा है वो बुला ले

क़दम उसी मोड़ पर जमे हैं

नज़र समेटे हुए खड़ा हूँ

=========================

नज़्म उलझी हुई है सीने में

मिसरे अटके हुए हैं होठों पर

उड़ते-फिरते हैं तितलियों की तरह

लफ़्ज़ काग़ज़ पे बैठते ही नहीं

कब से बैठा हुआ हूँ मैं जानम

सादे काग़ज़ पे लिखके नाम तेरा

बस तेरा नाम ही मुकम्मल है

इससे बेहतर भी नज़्म क्या होगी

==============================

मैं अपने घर में ही अजनबी हो गया हूँ आ कर

मुझे यहाँ देखकर मेरी रूह डर गई है

सहम के सब आरज़ुएँ कोनों में जा छुपी हैं

लवें बुझा दी हैंअपने चेहरों की, हसरतों ने

कि शौक़ पहचनता ही नहीं

मुरादें दहलीज़ ही पे सर रख के मर गई हैं

मैं किस वतन की तलाश में यूँ चला था घर से

कि अपने घर में भी अजनबी हो गया हूँ आ कर

===========================

हाथ छूटे भी तो रिश्ते नहीं छोड़ा करते
वक़्त की शाख़ से लम्हें नहीं तोड़ा करते

जिस की आवाज़ में सिलवट हो निगाहों में शिकन
ऐसी तस्वीर के टुकड़े नहीं जोड़ा करते

शहद जीने का मिला करता है थोड़ा थोड़ा
जाने वालों के लिये दिल नहीं थोड़ा करते

लग के साहिल से जो बहता है उसे बहने दो
ऐसी दरिया का कभी रुख़ नहीं मोड़ा करते

============================

एक पुराना मौसम लौटा याद भरी पुरवाई भी
ऐसा तो कम ही होता है वो भी हों तनहाई भी

यादों की बौछारों से जब पलकें भीगने लगती हैं

कितनी सौंधी लगती है तब माज़ी की रुसवाई भी

दो दो शक़्लें दिखती हैं इस बहके से आईने में

मेरे साथ चला आया है आपका इक सौदाई भी

ख़ामोशी का हासिल भी इक लम्बी सी ख़ामोशी है

उन की बात सुनी भी हमने अपनी बात सुनाई भी

==========================

एक परवाज़ दिखाई दी है

तेरी आवाज़ सुनाई दी है

जिस की आँखों में कटी थी सदियाँ

उस ने सदियों की जुदाई दी है

सिर्फ़ एक सफ़ाह पलट कर उस ने
बीती बातों की सफ़ाई दी है

फिर वहीं लौट के जाना होगा
यार ने कैसी रिहाई दी है

आग ने क्या क्या जलाया है शब भर
कितनी ख़ुश-रंग दिखाई दी है

===========================

दिन कुछ ऐसे गुज़ारता है कोई
जैसे एहसान उतारता है कोई

आईना देख के तसल्ली हुई
हम को इस घर में जानता है कोई
पक गया है शज़र पे फल शायद
फिर से पत्थर उछालता है कोई

फिर नज़र में लहू के छींटे हैं

तुम को शायद मुग़ालता है कोई

देर से गूँजतें हैं सन्नाटे

जैसे हम को पुकारता है कोई

================================

चलो ना भटके

लफ़ंगे कूचों में

लुच्ची गलियों के

चौक देखें

सुना है वो लोग

चूस कर जिन को वक़्त ने

रास्तें में फेंका थ

सब यहीं आके बस गये हैं

ये छिलके हैं ज़िन्दगी के

इन का अर्क निकालो

कि ज़हर इन का

तुम्हरे जिस्मों में

ज़हर पलते हैं

और जितने वो मार देगा

चलो ना भटके

लफ़ंगे कूचों में

==============================

आँखों में जल रहा है क्यूँ बुझता नहीं धुआँ

उठता तो है घटा-सा बरसता नहीं धुआँ

चूल्हे नहीं जलाये या बस्ती ही जल गई

कुछ रोज़ हो गये हैं अब उठता नहीं धुआँ

आँखों के पोंछने से लगा आँच का पता

यूँ चेहरा फेर लेने से छुपता नहीं धुआँ

आँखों से आँसुओं के मरासिम पुराने हैं

मेहमाँ ये घर में आयें तो चुभता नहीं धुआँ

==============================

आदतन तुम ने कर दिये वादे

आदतन हम ने ऐतबार किया

तेरी राहों में हर बार रुक कर

हम ने अपना ही इन्तज़ार किया

अब ना माँगेंगे जिन्दगी या रब

ये गुनाह हम ने एक बार किया

==============================

आओ फिर नज़्म कहें

फिर किसी दर्द को सहलाकर सुजा ले आँखें

फिर किसी दुखती हुई रग में छुपा दें नश्तर

या किसी भूली हुई राह पे मुड़कर एक बार

नाम लेकर किसी हमनाम को आवाज़ ही दें लें

फिर कोई नज़्म कहें

================================

आओ तुमको उठा लूँ कंधों पर

तुम उचककर शरीर होठों से चूम लेना

चूम लेना ये चाँद का माथा

आज की रात देखा ना तुमने

कैसे झुक-झुक के कोहनियों के बल

चाँद इतना करीब आया है

================================

सांस लेना भी कैसी आदत है

जिए जाना भी क्या रवायत है

कोई आहट नहीं बदन में कहीं

कोई साया नहीं है आँखों में

पावँ बेहिस हैं,चलते जाते हैं

इक सफ़र है जो बहता रहता है

कितने बरसों से कितनी सदियों से

जिए जाते हैं,जिए जाते हैं

आदतें भी अजीब होती हैं

================================

देखो आहिस्ता चलो,और भी आहिस्ता ज़रा

देखना,सोच-समझकर ज़रा पाँव रखना

जोर से बज न उठे पैरों की आवाज़ कहीं

कांच के ख़्वाब हैं बिखरे हुए तन्हाई में

ख़्वाब टूटे न कोई, जाग न जायें देखो

जाग जायेगा कोई ख़्वाब तो मर जायेगा

================================

आओ, सारे पहन लें आईने

सारे देखेंगे अपना ही चेहरा

रूह ? अपनी भी किसने देखी है!

...

क्या पता कब, कहाँ से मारेगी
बस कि मैं ज़िन्दगी से डरता हूँ

मौत का क्या है, एक बार मारेगी

..

उठते हुए जाते हुए पंछी ने बस इतना ही देखा
देर तक हाथ हिलाती रही वो शाख़ फ़िज़ा में

अलविदा कहने को, या पास बुलाने के लिए?

==============================

सब पे आती है सब की बारी से

मौत मुंसिफ़ है कम-ओ-बेश नहीं

ज़िन्दगी सब पे क्यूँ नहीं आती

..

कौन खायेगा किसका हिस्सा है

दाने-दाने पे नाम लिखा है

'सेठ सूदचंद मूलचंद आक़ा'

..

उफ़! ये भीगा हुआ अख़बार

पेपर वाले को कल से चेंज करो

'पांच सौ गाँव बह गए इस साल'

==============================

नीले-नीले से शब के गुम्बद में

तानपुरा मिला रहा है कोई

एक शफ्फाफ़ काँच का दरिया

जब खनक जाता है किनारों से

देर तक गूँजता है कानो में

पलकें झपका के देखती हैं शमएं

और फ़ानूस गुनगुनाते हैं

मैंने मुन्द्रों की तरह कानो में

तेरी आवाज़ पहन रक्खी है

==============================

चौक से चलकर,मंडी से,बाज़ार से होकर

लाल गली से गुज़री है कागज़ की कश्ती

बारिश के लावारिस पानी पर बैठी बेचारी कश्ती

शहर की आवारा गलियों से सहमी-सहमी पूछ रही हैं

हर कश्ती का साहिल होता है तो-

मेरा भी क्या साहिल होगा?

एक मासूम-से बच्चे ने

बेमानी को मानी देकर

रद्दी के कागज़ पर कैसा ज़ुल्म किया है

===============================

ठंडी साँसे ना पालो सीने में

लम्बी सांसों में सांप रहते हैं

ऐसे ही एक सांस ने इक बार

डस लिया था हसी क्लियोपेत्रा को

मेरे होटों पे अपने लब रखकर

फूँक दो सारी साँसों को 'बीबा'

मुझको आदत है ज़हर पीने की

==============================

रात में देखो झील का चेहरा

किस कदर पाक,पुर्सुकुं,गमगीं

कोई साया नहीं है पानी पर

कोई सिलवट नहीं है आँखों में

नीन्द आ जाये दर्द को जैसे

जैसे मरियम उडाद बैठी हो

जैसे चेहरा हटाके चेहरे का

सिर्फ एहसास रख दिया हो वहाँ

==============================

ख्याल ,सांस नज़र,सोच खोलकर दे दो

लबों से बोल उतारो,जुबां से आवाज़ें

हथेलियों से लकीरें उतारकर दे दो

हाँ, दे दो अपनी 'खुदी' भी की 'खुद' नहीं हो तुम

उतारों रूह से ये जिस्म का हसीं गहना

उठो दुआ से तो 'आमीन' कहके रूह दे दो

==============================

खाली डिब्बा है फ़क़त, खोला हुआ चीरा हुआ

यूँ ही दीवारों से भिड़ता हुआ, टकराता हुआ

बेवजह सड़कों पे बिखरा हुआ, फैलाया हुआ

ठोकरें खाता हुआ खाली लुढ़कता डिब्बा

यूँ भी होता है कोई खाली-सा- बेकार-सा दिन

ऐसा बेरंग-सा बेमानी-सा बेनाम-सा दिन

खाली डिब्बा है फ़क़त, खोला हुआ चीरा हुआ

यूँ ही दीवारों से भिड़ता हुआ, टकराता हुआ

बेवजह सड़कों पे बिखरा हुआ, फैलाया हुआ

ठोकरें खाता हुआ खाली लुढ़कता डिब्बा

यूँ भी होता है कोई खाली-सा- बेकार-सा दिन

ऐसा बेरंग-सा बेमानी-सा बेनाम-सा दिन

===============================

कंधे झुक जाते है जब बोझ से इस लम्बे सफ़र के

हांफ जाता हूँ मैं जब चढ़ते हुए तेज चढाने

सांसे रह जाती है जब सीने में एक गुच्छा हो कर

और लगता है दम टूट जायेगा यहीं पर

एक नन्ही सी नज़्म मेरे सामने आ कर

मुझ से कहती है मेरा हाथ पकड़ कर-मेरे शायर

ला , मेरे कन्धों पे रख दे,

में तेरा बोझ उठा लूं

===============================

दिल में ऐसे ठहर गए हैं ग़म

जैसे जंगल में शाम के साये

जाते-जाते सहम के रुक जाएँ

मुडके देखे उदास राहों पर

कैसे बुझते हुए उजालों में

दूर तक धूल ही धूल उडती है

================================

छोटे थे, माँ उपले थापा करती थी

हम उपलों पर शक्लें गूँधा करते थे

आँख लगाकर - कान बनाकर

नाक सजाकर -

पगड़ी वाला, टोपी वाला

मेरा उपला -

तेरा उपला -

अपने-अपने जाने-पहचाने नामों से

उपले थापा करते थे

हँसता-खेलता सूरज रोज़ सवेरे आकर

गोबर के उपलों पे खेला करता था

रात को आँगन में जब चूल्हा जलता था

हम सारे चूल्हा घेर के बैठे रहते थे

किस उपले की बारी आयी

किसका उपला राख हुआ

वो पंडित था -

इक मुन्ना था -

इक दशरथ था -

बरसों बाद - मैं

श्मशान में बैठा सोच रहा हूँ

आज की रात इस वक्त के जलते चूल्हे में

इक दोस्त का उपला और गया !

==============================

आज फिर चाँद की पेशानी से उठता है धुआँ

आज फिर महकी हुई रात में जलना होगा

आज फिर सीने में उलझी हुई वज़नी साँसें

फट के बस टूट ही जाएँगी, बिखर जाएँगी

आज फिर जागते गुज़रेगी तेरे ख्वाब में रात

आज फिर चाँद की पेशानी से उठता धुआँ

================================

आदमी बुलबुला है पानी का

और पानी की बहती सतह पर टूटता भी है, डूबता भी है,

फिर उभरता है, फिर से बहता है,

न समंदर निगला सका इसको, न तवारीख़ तोड़ पाई है,

वक्त की मौज पर सदा बहता आदमी बुलबुला है पानी का।

==============================

चार तिनके उठा के जंगल से

एक बाली अनाज की लेकर

चंद कतरे बिलखते अश्कों के

चंद फांके बुझे हुए लब पर

मुट्ठी भर अपने कब्र की मिटटी

मुट्ठी भर आरजुओं का गारा

एक तामीर की लिए हसरत

तेरा खानाबदोश बेचारा

शहर में दर-ब-दर भटकता है

तेरा कांधा मिले तो टेकूं!

============================

गोल फूला हुआ ग़ुब्बारा थक कर

एक नुकीली पहाड़ी यूँ जाके टिका है

जैसे ऊँगली पे मदारी ने उठा रक्खा हो गोला

फूँक से ठेलो तो पानी में उतर जाएगा

भक से फट जाएगा फूला हुआ सूरज का ग़ुब्बारा

छन-से बुझ जाएगा इक और दहकता हुआ दिन

==============================

बस्ता फ़ेंक के लोची भागा रोशनआरा बाग़ की जानिब

चिल्लाता : 'चल गुड्डी चल'

पक्के जामुन टपकेंगे'

आँगन की रस्सी से माँ ने कपड़े खोले

और तंदूर पे लाके टीन की चादर डाली

सारे दिन के सूखे पापड़

लच्छी ने लिपटा ई चादर

'बच गई रब्बा' किया कराया धुल जाना था'

.ख़ैरु ने अपने खेतों की सूखी मिट्टी

झुर्रियों वाले हाथ में ले कर

भीगी-भीगी आँखों से फिर ऊपर देखा

झूम के फिर उट्ठे हैं बादल

टूट के फिर मेंह बरसेगा

===============================

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो कि दास्ताँ आगे और भी है

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो

अभी तो टूटी है कच्ची मिट्टी, अभी तो बस जिस्म ही गिरे हैं

अभी तो किरदार ही बुझे है,

अभी सुलगते हैं रूह के ग़म

अभी धड़कतें है दर्द दिल के

अभी तो एहसास जी रहा है

यह लौ बचा लो जो थक के किरदार की हथेली से गिर पड़ी है

यह लौ बचा लो यहीं से उठेगी जुस्तजू फिर बगुला बन कर

यहीं से उठेगा कोई किरदार फिर इसी रोशनी को ले कर

कहीं तो अंजाम-ए-जुस्तजू के सिरे मिलेंगे

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो कि दास्ताँ आगे और भी है

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो

अभी तो टूटी है कच्ची मिट्टी, अभी तो बस जिस्म ही गिरे हैं

अभी तो किरदार ही बुझे है,

अभी सुलगते हैं रूह के ग़म

अभी धड़कतें है दर्द दिल के

अभी तो एहसास जी रहा है

यह लौ बचा लो जो थक के किरदार की हथेली से गिर पड़ी है

यह लौ बचा लो यहीं से उठेगी जुस्तजू फिर बगुला बन कर

यहीं से उठेगा कोई किरदार फिर इसी रोशनी को ले कर

कहीं तो अंजाम-ए-जुस्तजू के सिरे मिलेंगे

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो

==============================

मैं उड़ते हुए पंछियों को डराता हुआ

कुचलता हुआ घास की कलगियाँ

गिराता हुआ गर्दनें इन दरख़्तों की, छुपता हुआ

जिनके पीछे से

निकला चला जा रहा था वह सूरज

त'आक़ुब में था उसके मैं

गिरफ़्तार करने गया था उसे

जो ले के मेरी उम्र का एक दिन भागता जा रहा था

==============================

रात भर सर्द हवा चलती रही

रात भर हमने

अलाव तापा

मैंने माज़ी से कई .ख़ुश्क सी शाख़ें काटीं

तुमने भी गुज़रे हुए लम्हों के पत्ते तोड़े

मैंने जेबों से निकालीं सभी सूखी नज़्में

तुमने भी हाथों से मुरझाए हुए .ख़त खोले

अपनी इन आँखों से मैंने कई मांजे तोड़े

और हाथों से कई बासी लकीरें फेंकीं

तुमने पलकों पे नमी सूख गई थी सो गिरा दी

रात भर जो मिला उगते बदन पर हमको

काट के डाल दिया जलते अलाव में उसे

रात भर फूंकों से हर लौ को जगाये रखा

और दो जिस्मों के ईंधन को जलाये रखा

रात भर बुझते हुए रिश्ते को तापा हमने

================================

वो जो शायर था चुप सा रहता था

बहकी-बहकी सी बातें करता था

आँखें कानों पे रख के सुनता था

गूंगी ख़ामोशियों की आवाज़ें

जमा करता था चाँद के साए

गीली-गीली सी नूर की बूंदें

ओक़ में भर के खड़खड़ाता था

रूखे-रूखे से रात के पत्ते

वक़्त के इस घनेरे जंगल में

कच्चे-पक्के से लम्हे चुनता था

हाँ वही वो अजीब सा शायर

रात को उठ के कोहनियों के बल

चाँद की ठोडी चूमा करता था

चाँद से गिर के मर गया है वो

लोग कहते हैं ख़ुदकुशी की है

=============================

देखो, आहिस्ता चलो और भी आहिस्ता ज़रा

देखना, सोच सँभल कर ज़रा पाँव रखना

ज़ोर से बज न उठे पैरों की आवाज़ कहीं

कांच के ख़्वाब हैं बिखरे हुए तन्हाई में

ख़्वाब टूटे न कोई जाग न जाए देखो

जाग जाएगा कोई ख़्वाब तो मर जाएगा

=============================

मुझसे इक नज़्म का वादा है,
मिलेगी मुझको
डूबती नब्ज़ों में,
जब दर्द को नींद आने लगे
ज़र्द सा चेहरा लिए चाँद,
उफ़क़ पर पहुंचे
दिन अभी पानी में हो,
रात किनारे के क़रीब
न अँधेरा, न उजाला हो,
यह न रात, न दिन

ज़िस्म जब ख़त्म हो
और रूह को जब सांस आए

मुझसे इक नज़्म का वादा है मिलेगी मुझको

==============================

शहतूत की शाख़ पे बैठा कोई

बुनता है रेशम के तागे

लम्हा-लम्हा खोल रहा है

पत्ता-पत्ता बीन रहा है

एक-एक सांस बजा कर सुनता है सौदाई

एक-एक सांस को खोल के अपने तन पर लिपटाता जाता है

अपनी ही साँसों का क़ैदी

रेशम का यह शायर इक दिन

अपने ही तागों में घुट कर मर जाएगा

==============================

न जाने क्या था, जो कहना था

आज मिल के तुझे

तुझे मिला था मगर, जाने क्या कहा मैंने

वो एक बात जो सोची थी तुझसे कह दूँगा

तुझे मिला तो लगा, वो भी कह चुका हूँ कभी

जाने क्या, ना जाने क्या था

जो कहना था आज मिल के तुझे

कुछ ऐसी बातें जो तुझसे कही नहीं हैं मगर

कुछ ऐसा लगता है तुझसे कभी कही होंगी

तेरे ख़याल से ग़ाफ़िल नहीं हूँ तेरी क़सम

तेरे ख़यालों में कुछ भूल-भूल जाता हूँ

जाने क्या, ना जाने क्या था जो कहना था

आज मिल के तुझे जाने क्या...

==============================

इन बूढ़े पहाड़ों पर, कुछ भी तो नहीं बदला

सदियों से गिरी बर्फ़ें

और उनपे बरसती हैं

हर साल नई बर्फ़ें

इन बूढ़े पहाड़ों पर....

घर लगते हैं क़ब्रों से

ख़ामोश सफ़ेदी में

कुतबे से दरख़्तों के

ना आब था ना दानें

अलग़ोज़ा की वादी में

भेड़ों की गईं जानें

संवाद : कुछ वक़्त नहीं गुज़रा नानी ने बताया था

सरसब्ज़ ढलानों पर बस्ती गड़रियों की

और भेड़ों की रेवड़ थे

गाना :

ऊँचे कोहसारों के

गिरते हुए दामन में

जंगल हैं चनारों के

सब लाल से रहते हैं

जब धूप चमकती है

कुछ और दहकते हैं

हर साल चनारों में

इक आग के लगने से

मरते हैं हज़ारों में !

इन बूढ़े पहाड़ों पर...

संवाद : चुपचाप अँधेरे में अक्सर उस जंगल में

इक भेड़िया आता था

ले जाता था रेवड़ से

इक भेड़ उठा कर वो

और सुबह को जंगल में

बस खाल पड़ी मिलती।

गाना : हर साल उमड़ता है

दरिया पे बारिश में

इक दौरा-सा पड़ता है

सब तोड़ के गिराता है

संगलाख़ चट्टानों से

जा सर टकराता है

तारीख़ का कहना है

रहना चट्टानों को

दरियाओं को बहना है

अब की तुग़यानी में

कुछ डूब गए गाँव

कुछ बह गए पानी में

चढ़ती रही कुर्बानें

अलग़ोज़ा की वादी में

भेड़ों की गई जानें

संवाद : फिर सारे गड़रियों ने

उस भेड़िए को ढूँढ़ा

और मार के लौट आए

उस रात इक जश्न हुआ

अब सुबह को जंगल में

दो और मिली खालें

गाना : नानी की अगर माने

तो भेड़िया ज़िन्दा है

जाएँगी अभी जानें

इन बूढ़े पहाड़ों पर कुछ भी तो नहीं बदला...

==============================

कितनी सदियों से ढूँढ़ती होंगी

तुमको ये चाँदनी की आवज़ें

पूर्णमासी की रात जंगल में

नीले शीशम के पेड़ के नीचे

बैठकर तुम कभी सुनो जानम

भीगी-भीगी उदास आवाज़ें

नाम लेकर पुकारती है तुम्हें

पूर्णमासी की रात जंगल में...

पूर्णमासी की रात जंगल में

चाँद जब झील में उतरता है

गुनगुनाती हुई हवा जानम

पत्ते-पत्ते के कान में जाकर

नाम ले ले के पूछती है तुम्हें

पूर्णमासी की रात जंगल में

तुमको ये चाँदनी आवाज़ें

कितनी सदियों से ढूँढ़ती होंगी

==============================

प्यार कभी इकतरफ़ा होता है; न होगा

दो रूहों के मिलन की जुड़वां पैदाईश है ये

प्यार अकेला नहीं जी सकता

जीता है तो दो लोगों में

मरता है तो दो मरते हैं

प्यार इक बहता दरिया है

झील नहीं कि जिसको किनारे बाँध के बैठे रहते हैं

सागर भी नहीं कि जिसका किनारा नहीं होता

बस दरिया है और बह जाता है.

दरिया जैसे चढ़ जाता है ढल जाता है

चढ़ना ढलना प्यार में वो सब होता है

पानी की आदत है उपर से नीचे की जानिब बहना

नीचे से फिर भाग के सूरत उपर उठना

बादल बन आकाश में बहना

कांपने लगता है जब तेज़ हवाएँ छेड़े

बूँद-बूँद बरस जाता है.

प्यार एक ज़िस्म के साज़ पर बजती गूँज नहीं है

न मन्दिर की आरती है न पूजा है

प्यार नफा है न लालच है

न कोई लाभ न हानि कोई

प्यार हेलान हैं न एहसान है.

न कोई जंग की जीत है ये

न ये हुनर है न ये इनाम है

न रिवाज कोई न रीत है ये

ये रहम नहीं ये दान नहीं

न बीज नहीं कोई जो बेच सकें.

खुशबू है मगर ये खुशबू की पहचान नहीं

दर्द, दिलासे, शक़, विश्वास, जुनूं,

और होशो हवास के इक अहसास के कोख से पैदा हुआ

इक रिश्ता है ये

यह सम्बन्ध है दुनियारों का,

दुरमाओं का, पहचानों का

पैदा होता है, बढ़ता है ये, बूढा होता नहीं

मिटटी में पले इक दर्द की ठंढी धूप तले

जड़ और तल की एक फसल

कटती है मगर ये फटती नहीं.

मट्टी और पानी और हवा कुछ रौशनी

और तारीकी को छोड़

जब बीज की आँख में झांकते हैं

तब पौधा गर्दन ऊँची करके

मुंह नाक नज़र दिखलाता है.

पौधे के पत्ते-पत्ते पर

कुछ प्रश्न भी है कुछ उत्तर भी

किस मिट्टी की कोख़ से हो तुम

किस मौसम ने पाला पोसा

औ' सूरज का छिड़काव किया.

किस सिम्त गयी साखें उसकी

कुछ पत्तों के चेहरे उपर हैं

आकाश के ज़ानिब तकते हैं

कुछ लटके हुए ग़मगीन मगर

शाखों के रगों से बहते हुए

पानी से जुड़े मट्टी के तले

एक बीज से आकर पूछते हैं.

हम तुम तो नहीं

पर पूछना है तुम हमसे हो या हम तुमसे

प्यार अगर वो बीज है तो

इक प्रश्न भी है इक उत्तर भी.

==============================

बोस्की ब्याहने का समय अब करीब आने लगा है

जिस्म से छूट रहा है कुछ कुछ

रूह में डूब रहा है कुछ कुछ

कुछ उदासी है,सुकूं भी

सुबह का वक्त है पौ फटने का,

या झुटपुटा शाम का है मालूम नहीं

यूँ भी लगता है कि जो मोड़ भी अब आएगा

वो किसी और तरफ़ मुड़ के चली जाएगी,

उगते हुए सूरज की तरफ़

और मैं सीधा ही कुछ दूर अकेला जा कर

शाम के दूसरे सूरज में समा जाऊँगा !

नाराज़ है मुझसे बोस्की शायद

जिस्म का एक अंग चुप चुप सा है

सूजे से लगते है पांव

सोच में एक भंवर की आँख है

घूम घूम कर देख रही है

बोस्की,सूरज का टुकड़ा है

मेरे खून में रात और दिन घुलता रहता है

वह क्या जाने,जब वो रूठे

मेरी रगों में खून की गर्दिश मद्धम पड़ने लगती है.

मैं उड़ते हुए पंछियों को डराता हुआ

कुचलता हुआ घास की कलगियाँ

गिराता हुआ गर्दनें इन दरख्तों की,छुपता हुआ

जिनके पीछे से

निकला चला जा रहा था वह सूरज

तआकुब में था उसके मैं

गिरफ्तार करने गया था उसे

जो ले के मेरी उम्र का एक दिन भागता जा रहा था

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

वक़्त की आँख पे पट्टी बांध के.

चोर सिपाही खेल रहे थे--

रात और दिन और चाँद और मैं--

जाने कैसे इस गर्दिश में अटका पाँव,

दूर गिरा जा कर मैं जैसे,

रौशनियों के धक्के से

परछाईं जमीं पर गिरती है!

धेय्या छोने से पहले ही--

वक़्त ने चोर कहा और आँखे खोल के

मुझको पकड़ लिया--

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

तुम्हारी फुर्कत में जो गुजरता है,

और फिर भी नहीं गुजरता,

मैं वक़्त कैसे बयाँ करूँ , वक़्त और क्या है?

कि वक़्त बांगे जरस नहीं जो बता रहा है

कि दो बजे हैं,

कलाई पर जिस अकाब को बांध कर

समझता हूँ वक्त है,

वह वहाँ नहीं है!

वह उड़ चुका

जैसे रंग उड़ता है मेरे चेहरे का, हर तहय्युर पे,

और दिखता नहीं किसी को,

वह उड़ रहा है कि जैसे इस बेकराँ समंदर से

भाप उड़ती है

और दिखती नहीं कहीं भी,

कदीम वजनी इमारतों में,

कुछ ऐसे रखा है, जैसे कागज पे बट्टा रख दें,

दबा दें, तारीख उड़ ना जाये,

मैं वक्त कैसे बयाँ करूँ, वक्त और क्या है?

कभी कभी वक्त यूँ भी लगता है मुझको

जैसे, गुलाम है!

आफ़ताब का एक दहकता गोला उठा के

हर रोज पीठ पर वह, फलक पर चढ़ता है चप्पा

चप्पा कदम जमाकर,

वह पूरा कोहसार पार कर के,

उतारता है, उफुक कि दहलीज़ पर दहकता

हुआ सा पत्थर,

टिका के पानी की पतली सुतली पे, लौट

जाता है अगले दिन का उठाने गोला ,

और उसके जाते ही

धीरे धीरे वह पूरा गोला निगल के बाहर निकलती है

रात, अपनी पीली सी जीभ खोले,

गुलाम है वक्त गर्दिशों का,

कि जैसे उसका गुलाम मैं हूँ !!

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

उफुक फलांग के उमरा हुजूम लोगों का
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

कोई मीनारे से उतरा, कोई मुंडेरों से

किसी ने सीढियां लपकीं, हटाई दीवारें--

कोई अजाँ से उठा है, कोई जरस सुन कर!

गुस्सीली आँखों में फुंकारते हवाले लिये,

गली के मोड़ पे आकर हुए हैं जमा सभी!

हर इक के हाथ में पत्थर हैं कुछ अकीदों के

खुदा कि जात को संगसार करने आये हैं!!

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

मौजजा कोई भी उस शब ना हुआ--

जितने भी लोग थे उस रोज इबादतगाह में,

सब के होठों पर दुआ थी,

और आँखों में चरागाँ था यकीं का

ये खुदा का घर है,

जलजले तोड़ नहीं सकते इसे, आग जला सकती नहीं!

सैकड़ों मौजजों कि सब ने हिकायात सुनी थीं

सैकड़ों नामों से उन सब ने पुकारा उसको ,

गैब से कोई भी आवाज नहीं आई किसी की,

ना खुदा कि -- ना पुलिस कि !!

सब के सब भूने गए आग में, और भस्म हुये .

मौजजा कोई भी उस शब् ना हुआ!!

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

मौजजे होते हैं,-- ये बात सुना करते थे!

वक्त आने पे मगर--

आग से फूल उगे, और ना जमीं से कोई दरिया फूटा

ना समंदर से किसी मौज ने फेंका आँचल,

ना फलक से कोई कश्ती उतरी!

आजमाइश की थी काल रात खुदाओं के लिये

काल मेरे शहर में घर उनके जलाये सब ने!!

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

अपनी मर्जी से तो मजहब भी नहीं उसने चुना था,

उसका मज़हब था जो माँ बाप से ही उसने

विरासत में लिया था---

अपने माँ बाप चुने कोई ये मुमकिन ही कहाँ है

मुल्क में मर्ज़ी थी उसकी न वतन उसकी रजा से

वो तो कुल नौ ही बरस का था उसे क्यों चुनकर,

फिर्कादाराना फसादात ने कल क़त्ल किया--!!

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

आग का पेट बड़ा है!

आग को चाहिए हर लहजा चबाने के लिये

खुश्क करारे पत्ते,

आग कर लेती है तिनकों पे गुजारा लेकिन--

आशियानों को निगलती है निवालों की तरह,

आग को सब्ज हरी टहनियाँ अच्छी नहीं लगतीं,
ढूंढती है, कि कहीं सूखे हुये जिस्म मिलें!

उसको जंगल कि हवा रास बहुत है फिर भी,
अब गरीबों कि कई बस्तियों पर देखा है हमला करते,
आग अब मंदिरों-मस्जिद की गजा खाती है!
लोगों के हाथों में अब आग नहीं--
आग के हाथों में कुछ लोग हैं अब
÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷
शहर में आदमी कोई भी नहीं क़त्ल हुआ,
नाम थे लोगों के जो, क़त्ल हुये.
सर नहीं काटा, किसी ने भी, कहीं पर कोई--
लोगों ने टोपियाँ काटी थीं कि जिनमें सर थे!

और ये बहता हुआ सुर्ख लहू है जो सड़क पर,
ज़बह होती हुई आवाजों की गर्दन से गिरा था

÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

रात जब मुंबई की सड़कों पर

अपने पंजों को पेट में लेकर

काली बिल्ली की तरह सोती है

अपनी पलकें नहीं गिराती कभी,--

साँस की लंबी लंबी बौछारें

उड़ती रहती हैं खुश्क साहिल पर!

÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

अल्फाज जो उगते, मुरझाते, जलते, बुझते

रहते हैं मेरे चारों तरफ,

अल्फ़ाज़ जो मेरे गिर्द पतंगों की सूरत उड़ते

रहते हैं रात और दिन

इन लफ़्ज़ों के किरदार हैं, इनकी शक्लें हैं,

रंग रूप भी हैं-- और उम्रें भी!

कुछ लफ्ज़ बहुत बीमार हैं, अब चल सकते नहीं,

कुछ लफ्ज़ तो बिस्तरेमर्ग पे हैं,

कुछ लफ्ज़ हैं जिनको चोटें लगती रहती हैं,

मैं पट्टियाँ करता रहता हूँ!

अल्फाज़ कई, हर चार तरफ बस यू हीं

थूकते रहते हैं,

गाली की तरह--

मतलब भी नहीं, मकसद भी नहीं--

कुछ लफ्ज़ हैं मुँह में रखे हुए

चुइंगगम की तरह हम जिनकी जुगाली करते हैं!

लफ़्ज़ों के दाँत नहीं होते, पर काटते हैं,

और काट लें तो फिर उनके जख्म नहीं भरते!

हर रोज मदरसों में 'टीचर' आते है गालें भर भर के,

छः छः घंटे अल्फाज लुटाते रहते हैं,

बरसों के घिसे, बेरंग से, बेआहंग से,

फीके लफ्ज़ कि जिनमे रस भी नहीं,

मानि भी नहीं!

एक भीगा हुआ, छल्का छल्का, वह लफ्ज़ भी है,

जब दर्द छुए तो आँखों में भर आता है

कहने के लिये लब हिलते नहीं,

आँखों से अदा हो जाता है!!

÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

सुना है मिट्टी पानी का अज़ल से एक रिश्ता है,

जड़ें मिट्टी में लगती हैं,

जड़ों में पानी रहता है.

तुम्हारी आँख से आँसू का गिरना था कि दिल
में दर्द भर आया,

ज़रा से बीज से कोंपल निकल आयी!!

जड़े मिट्टी में लगती हैं,

जड़ों में पानी रहता है!!

÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

शीशम अब तक सहमा सा चुपचाप खड़ा है,

भीगा भीगा ठिठुरा ठिठुरा.

बूँदें पत्ता पत्ता कर के,

टप टप करती टूटती हैं तो सिसकी की आवाज

आती है!

बारिश के जाने के बाद भी,

देर तलक टपका रहता है !

तुमको छोड़े देर हुई है--

आँसू अब तक टूट रहे हैं

÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

मुँह ही मुँह कुछ बुड्बुड् करता, बहता है

ये बुड्ढा दरिया!

कोई पूछे तुझको क्या लेना, क्या लोग किनारों
पर करते हैं,
तू मत सुन, मत कान लगा उनकी बातों पर!
घाट पे लच्छी को गर झूठ कहा है साले माधव ने,
तुझको क्या लेना लच्छी से? जाये,जा के डूब मरे!

यही तो दुःख है दरिया को!
जन्मी थी तो "आँवल नाल" उसी के हाथ में सौंपी
थी झूलन दाई ने,
उसने ही सागर पहुचाये थे वह "लीडे",
कल जब पेट नजर आयेगा, डूब मरेगी
और वह लाश भी उसको ही गुम करनी होगी!
लाश मिली तो गाँव वाले लच्छी को बदनाम करेंगे!!

मुँह ही मुँह, कुछ बुड्बुड् करता, बहता है
ये बुड्ढा दरिया!!

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

मुँह ही मुँह, कुछ बुड़बुड़ करता, बहता है
ये बुड्ढा दरिया

दिन दोपहरे, मैंने इसको खर्राटे लेते देखा है
ऐसा चित बहता है दोनों पाँव पसारे
पत्थर फेंकें , टांग से खेंचें, बगले आकर चोंच मारें
टस से मस होता ही नहीं है
चौंक उठता है जब बारिश की बूँदें
आ कर चुभती हैं
धीरे धीरे हांफने लाग जाता है उसके पेट का पानी.
तिल मिल करता, रेत पे दोनों बाहें मारने लगता है
बारिश पतली पतली बूंदों से जब उसके पेट में
गुदगुद करती है!

मुँह ही मुँह कुछ बुड़बुड़ करता रहता है

ये बुड्ढा दरिया!!

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

मुँह ही मुँह कुछ बुड्बुड् करता, बहता है
ये बुड्ढा दरिया!

पेट का पानी धीरे धीरे सूख रहा है,
दुबला दुबला रहता है अब!
कूद के गिरता था ये जिस पत्थर से पहले,
वह पत्थर अब धीरे से लटका के इस को
अगले पत्थर से कहता है,--
इस बुड्ढे को हाथ पकड़ के, पार करा दे!!

मुँह ही मुँह कुछ बुड्बुड् करता, बहता रहता
है ये दरिया!
छोटी छोटी ख्वाहिशें हैं कुछ उसके दिल में--
रेत पे रेंगते रेंगते सारी उम्र कटी है,

पुल पर चढ के बहने की ख्वाहिश है दिल में!

जाडो में जब कोहरा उसके पूरे मुँह पर आ जाता है,

और हवा लहरा के उसका चेहरा पोंछ के जाती है--

ख्वाहिश है कि एक दफा तो

वह भी उसके साथ उड़े और

जंगल से गायब हो जाये!!

कभी कभी यूँ भी होता है,

पुल से रेल गुजरती है तो बहता दरिया,

पल के पल बस रुक जाता है--

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

इतनी सी उम्मीद लिये--

शायद फिर से देख सके वह, इक दिन उस

लड़की का चेहरा,

जिसने फूल और तुलसी उसको पूज के अपना

वर माँगा था--

उस लड़की की सूरत उसने,

अक्स उतारा था जब से, तह में रख ली थी!!

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

खड़खड़ाता हुआ निकला है उफ़ुक से सूरज,

जैसे कीचड़ में फँसा पहिया धकेला हो किसी ने

चिब्बे टिब्बे से किनारों पे नज़र आते हैं.

रोज़ सा गोल नहीं है!

उधरे-उधरे से उजाले हैं बदन पर

उर चेहरे पे खरोचों के निशाँ हैं!!

######################

रात जब गहरी नींद में थी कल

एक ताज़ा सफ़ेद कैनवस पर,

आतिशी सुर्ख रंगों से,

मैंने रौशन किया था इक सूरज!

सुबह तक जल चुका था वह कैनवस,

राख बिखरी हुई थी कमरे में!!

#####################

"जोरहट" में, एक दफ़ा

दूर उफ़ुक के हलके हलके कोहरे में

'हेमन बरुआ' के चाय बागान के पीछे,

चान्द कुछ ऐसे रखा थ,-- --

जैसे चीनी मिट्टी की,चमकीली 'कैटल' राखी हो!!

###################

रात को फिर बादल ने आकर

गीले गीले पंजों से जब दरवाजे पर दस्तक दी,

झट से उठ के बैठ गया मैं बिस्तर में

अक्सर नीचे आकर रे कच्ची बस्ती में,

लोगों पर गुर्राता है

लोग बेचारे डाम्बर लीप के दीवारों पर--

बंद कर लेते हैं झिरयाँ

ताकि झाँक ना पाये घर के अंदर--

लेकिन, फिर भी--

गुर्राता, चिन्घार्ता बादल--

अक्सर ऐसे लूट के ले जाता है बस्ती,

जसे ठाकुर का कोई गुंडा,

बदमस्ती करता निकले इस बस्ती से!!

=============================

कल सुबह जब बारिश ने आकर खिड़की पर

दस्तक दी, थी

नींद में था मैं --बाहर अभी अँधेरा था!

ये तो कोई वक्त नहीं था, उठ कर उससे मिलने का!

मैंने पर्दा खींच दिया--

गीला गीला इक हवा का झोंका उसने

फूँका मेरे मुँह पर, लेकिन--
मेरी 'सेन्स आफ ह्युमर' भी कुछ नींद में थी--
मैंने उठकर ज़ोर से खिड़की के पट
उस पर भेड़ दिए--
और करवट लेकर फिर बिस्तर में डूब गया!

शयद बुरा लगा था उसको--
गुस्से में खिड़की के काँच पे
हत्थड़ मार के लौट गयी वह, दोबारा फिर
आयी नहीं -- --
खिड़की पर वह चटखा काँच अभी बाकी है!!
==============================
कुछ दिन से पड़ोसी के
घर में सन्नाटा है,
ना रेडियो चलता है,
ना रात को आँगन में

उड़ते हुए बर्तन हैं.

उस घर का पला कुत्ता--

खाने के लिये दिन भर,

आ जाता है मेरे घर

फिर रात उसी घर की

दहलीज पे सर रखकर

सो जाया करता है!

============================

आँगन के अहाते में

रस्सी पे टंगे कपड़े

अफसाना सुनाते हैं

एहवाल बताते हैं

कुछ रोज़ रूठाई के,

माँ बाप के घर रह कर

फिर मेरे पड़ोसी की

बीबी लौट आयी है.

दो चार दिनों में फिर,

पहले सी फ़िज़ा होगी,

आकाश भरा होगा,

और रात को आँगन से

कुछ "कामेट" गुज़रेंगे!

कुछ तश्तरियां उतरेंगी!

==========================

ये आइना बोलने लगा है,

मैं जब गुजरता हूँ सीढ़ियों से,

ये बातें करता है--आते जाते में पूछता है

"कहाँ गई वह फतुई तेरी------

ये कोट नेक-टाई तुझपे फबती नहीं, ये

मनसूई लग रही है--"

ये मेरी सूरत पे नुक्ताचीनी तो ऐसी करता है

जैसे मैं उसका अक्स हूँ--
और वो जायजा ले रहा है मेरा.
"तुम्हारा माथा कुशादा होने लगा है लेकिन,
तुम्हारे 'आइब्रो' सिकुड़ रहे हैं--
तुम्हरी आँखों का फासला कमता जा रहा है--
तुम्हारे माथे की बीच वाली शिकन बहुत गहरी
हो गई है--"

कभी कभी बेतकल्लुफी से बुलाकर कहता है!
"यार भोलू------
तुम अपने दफ्तर की मेज़ की दाहिनी तरफ की
दराज में रख के
भूल आये हो मुस्कराहट,
जहाँ पे पोशीदा एक फाइल रखी थी तुमने
वो मुस्कुराहट भी अपने होठों पे चस्पाँ कर लो,"

इस आईने को पलट के दीवार की तरफ भी

लगा चुका हूँ--

ये चुप तो हो जाता है मगर फिर भी देखता है--

ये आइना देखता बहुत है!

ये आइना बोलता बहुत है!!

================================

मैं जब भी गुजरा हूँ इस आईने से,

इस आईने ने कुतर लिया कोई हिस्सा मेरा.

इस आईने ने कभी मेरा पूरा अक्स वापस

नहीं किया है--

छुपा लिया मेरा कोई पहलू,

दिखा दिया कोई ज़ाविया ऐसा,

जिससे मुझको,मेरा कोई ऐब दिख ना पाए.

मैं खुद को देता रहूँ तसल्ली

कि मुझ सा तो दूसरा नहीं है !!

============================

एक पशेमानी रहती है

उलझन और गिरानी भी...

आओ फिर से लड़कर देंखें

शायद इससे बेहतर कोई

और सबब मिल जाए हमको

फिर से अलग हो जाने का !!

===========================

रात को अक्सर होता है,परवाने आकर,

टेबल लैम्प के गिर्द इकट्ठे हो जाते हैं

सुनते हैं,सर धुनते हैं

सुन के सब अश'आर गज़ल के

जब भी मैं दीवान-ए-ग़ालिब

खोल के पढ़ने बैठता हूँ

सुबह फिर दीवान के रौशन सफ़हों से

परवानों की राख उठानी पड़ती है .

=============================

याद है बारिशों का दिन पंचम

जब पहाड़ी के नीचे वादी में,

धुंध से झाँक कर निकलती हुई,

रेल की पटरियां गुजरती थीं--!

धुंध में ऐसे लग रहे थे हम,

जैसे दो पौधे पास बैठे हों,.

हम बहुत देर तक वहाँ बैठे,

उस मुसाफिर का जिक्र करते रहे,

जिसको आना था पिछली शब, लेकिन

उसकी आमद का वक्त टलता रहा!

देर तक पटरियों पे बैठे हुये

ट्रेन का इंतज़ार करते रहे.

ट्रेन आई, ना उसका वक्त हुआ,

और तुम यों ही दो कदम चलकर,

धुंद पर पाँव रख के चल भी दिए

मैं अकेला हूँ धुंध में पंचम!!

===========================

इक सन्नाटा भरा हुआ था,

एक गुब्बारे से कमरे में,

तेरे फोन की घंटी के बजने से पहले.

बासी सा माहौल ये सारा

थोड़ी देर को धड़का था

साँस हिली थी, नब्ज़ चली थी,

मायूसी की झिल्ली आँखों से उतरी कुछ लम्हों को--

फिर तेरी आवाज़ को, आखरी बार "खुदा हाफिज़"

कह के जाते देखा था!

इक सन्नाटा भरा हुआ है,

जिस्म के इस गुब्बारे में,

तेरी आखरी फोन के बाद--!!

=========================

आठ ही बिलियन उम्र जमीं की होगी शायद

ऐसा ही अंदाज़ा है कुछ 'साइंस' का

चार अशारिया छः बिलियन सालों की उम्र तो

बीत चुकी है

कितनी देर लगा दी तुम ने आने में

और अब मिल कर

किस दुनिया की दुनियादारी सोच रही हो

किस मज़हब और ज़ात और पात की फ़िक्र लगी है

आओ चलें अब---

तीन ही 'बिलियन' साल बचे हैं!

..

"वर्थ" जो सेंट है मिट्टी का

"वर्थ" जो तुमको भला लगता है

"वर्थ" के सेंट की खुश्बू थी थियेटर में,

गयी रात के शो में,

तुमको देखा तो नहीं,सेंट की खुश्बू से

नज़र आती रही तुम !

दो दो फिल्में थीं,बयक वक्त जो पर्दे पे रंवां थीं,

पर्दे पर चलती हुयी फिल्म के साथ,

और इक फिल्म मेरे जहन पे भी चलती रही !

'एना'के रोल में जब देख रहा था तुमको,

'टॉयस्टॉय'की कहानी में हमारी भी कहानी के

सिरे जुड़ने लगे थे--

सूखी मिट्टी पे चटकती हुई बारिश का वह मंजर,

घास के सोंधे,हरे रंग,

जिस्म की मिट्टी से निकली हुयी खुश्बू की वो यादें--

मंजर-ए-रक्स में सब देख रहे तुम को,

और मैं पाँव के उस ज़ख्मी अंगूठे पे बंधी पट्टी को,

शॉट के फ्रेम में जो आई ना थी

और वह छोटा अदाकार जो उस रक्स में

बे वजह तुम्हें छू के गुज़रता था,

जिसे झिड़का था मैंने !

मैंने कुछ शाट तो कटवा भी दिए थे उस के

कोहरे के सीन में,सचमुच ही ठिठुरती हुयी

महसूस हुयीं

हाँलाकि याद था गर्मी में बड़े कोट से

उलझी थीं बहुत तुम !

और मसनुई धुएँ ने जो कई आफतें की थीं,

हँस के इतना भी कहा था तुमने !

"इतनी सी आग है,

और उस पे धुएँ को जो गुमां होता है वो

कितना बड़ा है "

बर्फ के सीन में उतनी ही हसीं थी कल रात,

जिसनी उस रात थीं,फिल्म के पहलगाम से
जब लौटे थे दोनों,
और होटल में ख़बर थी कि तुम्हारे शौहर,
सुबह की पहली फ्लाईट से वहाँ पहुँचे हुए हैं.

रात की रात,बहुत कुछ था जो तबदील हुआ,
तुमने उस रात भी कुछ गोलियाँ कहा लेने की
कोशिश की थी,
जिस तरह फिल्म के आखिर में भी
"एना कैरेनिना"
ख़ुदकुशी करती है,इक रेल के नीचे आ कर--!

आखिरी सीन में जी चाहा कि मैं रोक दूँ उस
रेल का इंजन,
आँखे बंद कर लीं,कि मालूम था वह'एन्ड'मुझे!

पसेमंजर में बिलकती हुयी मौसीकी ने उस
रिश्ते का अन्जाम सुनाया,
जो कभी बाँधा था हमने !

"वर्थ" के सेंट की खुश्बू थी,थिएटर में,
गयी रात बहुत !

÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

निज़ामे-जहाँ,पढ़ के देखो तो कुछ इस तरह
चल रहा है !
इराक़ और अमरीका की जंग छिड़ने के इमकान
फिर बढ़ गए हैं.
अलिफ़ लैला की दास्ताँ वाला वो शहरे-बग़दाद
बिल्कुल तबाह हो चुका है.
ख़बर है किसी शख्स ने गंजे सर पर भी अब
बाल उगने की एक 'पेस्ट'ईज़ाद की है!
कपिलदेव ने चार सौ विकेटों का अपना

रिकार्ड कायम किया है.

.ख़बर है कि डायना और चार्ल्स अब,क्रिसमस

से पहले अलग हो रहे हैं.

किरोशा और सिलवानिया भी अलग होने ही

के लिए लड़ रहे हैं.

प्लास्टिक पे दस फ़ीसदी टैक्स फिर बढ़ गया है.

ये पहली नवम्बर की खबरें है सारी,--

निज़ामे जहाँ इस तरह चल रहा है !

मगर ये ख़बर तो कहीं भी नहीं है ,

कि तुम मुझसे नाराज़ बैठी हुई हो--

निज़ामे-जहाँ किस तरह चल रहा है ?

==========================

मैं कुछ-कुछ भूलता जाता हूँ अब तुझको,

तेरा चेहरा भी अब धुँधलाने लगा है अब तखय्युल में,

बदलने लग गया है अब यह सुब-हो-शाम का
मामूल,जिसमें,
तुझसे मिलने का ही इक मामूल शामिल था!

तेरे खत आते रहते थे तो मुझको याद रहते थे
तेरी आवाज़ के सुर भी!
तेरी आवाज़ को कागज़ पे रख के,मैंने चाहा
था कि 'पिन' कर लूँ,
वो जैसे तितलिओं के पर लगा लेता है कोई
अपनी अलबम में--!
तेरा 'बे'को दबा कर बात करना,
"वाव" पर होठों का छल्ला गोल होकर घूम
जाता था--!
बहुत दिन हो गए देखा नहीं,ना खत मिला कोई--
बहुत दिन हो गए सच्ची !!
तेरी आवाज़ की बौछार में भीगा नहीं हूँ मैं!

============================

ये राह बहुत आसान नहीं,

जिस राह पे हाथ छुड़ा कर तुम

यूँ तन तन्हा चल निकली हो

इस खौफ़ से शायद राह भटक जाओ ना कहीं

हर मोड़ पर मैंने नज़्म खड़ी कर रखी है!

थक जाओ अगर--

और तुमको ज़रूरत पड़ जाए,

इक नज़्म की ऊँगली थाम के वापस आ जाना!

============================

अगर ऐसा भी हो सकता---

तुम्हारी नींद में,सब ख़्वाब अपने मुंतकिल करके,

तुम्हें वो सब दिखा सकता,जो मैं ख्वाबो में

अक्सर देखा करता हूँ--!

ये हो सकता अगर मुमकिन--

तुम्हें मालूम हो जाता--

तुम्हें मैं ले गया था सरहदों के पार "दीना"१ में.

तुम्हें वो घर दिखया था,जहाँ पैदा हुआ था मैं,

जहाँ छत पर लगा सरियों का जंगला धूप से दिनभर

मेरे आंगन में सतरंजी बनाता था,मिटाता था--!

दिखायी थी तुम्हें वो खेतियाँ सरसों की "दीना"

में कि जिसके पीले-पीले फूल तुमको

ख़ाब में कच्चे खिलाए थे.

वहीं इक रास्ता था,"टहलियों" का,जिस पे

मीलों तक पड़ा करते थे झूले,सोंधे सावन के

उसी की सोंधी खुश्बू से,महक उठती हैं आँखे

जब कभी उस ख़्वाब से गुज़रूं!

तुम्हें'रोहतास'२ का 'चलता-कुआँ' भी तो

दिखाया था,

किले में बंद रहता था जो दिन भर,रात को

गाँव में आ जाता था,कहते हैं,

तुम्हें "काला"३ से "कालूवाल"४ तक ले कर
उड़ा हूँ मैं
तुम्हें "दरिया-ए-झेलम"पर अजब मंजर दिखाए थे
जहाँ तरबूज़ पे लेटे हुये तैराक लड़के बहते रहते थे--
जहाँ तगड़े से इक सरदार की पगड़ी पकड़ कर मैं,
नहाता,डुबकियाँ लेता,मगर जब गोता आ
जाता तो मेरी नींद खुल जाती !!
मग़र ये सिर्फ़ ख्वाबों ही में मुमकिन है
वहाँ जाने में अब दुश्वारियां हैं कुछ सियासत की.
वतन अब भी वही है,पर नहीं है मुल्क अब मेरा
वहाँ जाना हो अब तो दो-दो सरकारों के
दसियों दफ्तरों से
शक्ल पर लगवा के मोहरें ख़्वाब साबित
करने पड़ते है.

1.गुलज़ार का पैदाइशी कस्बा,जो कि आज जिला-

झेलम,पंजाब,पाकिस्तान में है. 2,3,4,ये सब ज़िला झेलम के मारुफ मकामात हैं.

==============================

इक अदाकार हूँ मैं!

मैं अदाकार हूँ ना

जीनी पड़ती है कई जिंदगियां एक हयाती में मुझे!

मेरा किरदार बदल जाता है , हर रोज ही सेट पर

मेरे हालात बदल जाते हैं

मेरा चेहरा भी बदल जाता है,

अफसाना-ओ-मंज़र के मुताबिक़

मेर आदात बदल जाती हैं.

और फिर दाग़ नहीं छूटते पहनी हुई पोशाकों के

खस्ता किरदारों का कुछ चूरा सा रह जाता है तह में

कोई नुकीला सा किरदार गुज़रता है रगों से

तो खराशों के निशाँ देर तलक रहते हैं दिल पर

ज़िन्दगी से ये उठाए हुए किरदार

खयाली भी नहीं हैं

कि उतर जाएँ वो पंखे की हवा से

स्याही रह जाती है सीने में,

अदीबों के लिखे जुमलों की

सीमीं परदे पे लिखी

साँस लेती हुई तहरीर नज़र आता हूँ

मैं अदाकार हूँ लेकिन

सिर्फ अदाकार नहीं

वक़्त की तस्वीर भी हूँ.

=============================

नुचे छीले गए कोहसार ने कोशिश तो की

गिरते हुए इक पेड़ को रोकें,

मगर कुछ लोग कंधे पर उठा कर उसको

पगडंडी के रस्ते ले गये थे--कारखानों में!

फलक को देखता ही रह गया पथराइ आँखों से!

बहुत नोची है मेरी खाल इंसाँ ने,

बहुत छीलें हैं मेरे सर से जंगल उसके तेशों ने,

मेरे दरियाओं,

मेरे आबसारों को बहुत नंगा किया है,

इस हवस आलूद--इंसाँ ने--!!

मेरा सीना तो फट जाता है लावे से,

मगर इंसान का सीना नहीं फटता--

वह पत्थर है-!!!

==========================

मेरी दहलीज़ पर बैठी हुयी जानो पे सर रखे

ये शब अफ़सोस करने आई है कि मेरे घर पे

आज ही जो मर गया है दिन

वह दिन हमजाद था उसका!

वह आई है कि मेरे घर में उसको दफ्न कर के,

इक दीया दहलीज़ पे रख कर,

निशानी छोड़ दे कि मह्व है ये कब्र,

इसमें दूसरा आकर नहीं लेटे!

मैं शब को कैसे बतलाऊँ,

बहुत से दिन मेरे आँगन में यूँ आधे अधूरे से

कफ़न ओढ़े पड़े हैं कितने सालों से,

जिन्हें मैं आज तक दफना नही पाया!!

==============================

दो बजने में आठ मिनट थे--

जब वह भारी बोरियों जैसी टांगों से बिल्डिंग

की छत पर पहुँचा था

थोड़ी देर को छत के फर्श पर बैठ ग़या था

छत पर एक कबाड़ी घर था,

सूखा सुकड़ा तिल्ले वाला, सूद निचोड़ू जागीरे,

का जूता वो पहचानता था,
इस बिल्डिंग में जिसका जो सामान मरा, बेकार
हुआ, वो ऊपर ला के फेंक गया!

उसके पास तो कितना कुछ था,--
कितना कुछ जो टूट चुका है, टूट रहा है--
शौहर और वतन की छोड़ी हमशीरा कल पाकिस्तान
से बच्चे लेकर लौट आई है!
सब के सब कुछ खाली बोतलों डिब्बों जैसे लगते हैं,
चिब्बे, पिचके, बिन लेबल के!
सुबह भी देखा तो बूढी दादी सोयी हुई थी,--
मरी नहीं थी!
जब दोपहर को, पानी पी कर, छत पर आया था
वो तब भी ,
मरी नहीं थी, सोयी हुई थी!
जी चाहा उसको भी ला कर छत पे फेंक दे,

जैसे टूटे एक पलंग की पुश्त पड़ी है!

दूर किसी घड़ियाल ने साढ़े चार बजाये,

दो बजने में आठ मिनट थे, जब वो छत पर आया था!

सीढियाँ चढ़ते चढ़ते उसने सोच लिया था,

जब उस पार "ट्रैफिक लाइट" बदलेगी

रुक जायेंगी सारी कारें,

तब वो पानी की टंकी के उपर चढ के, "पैरापेट" पर

उतरेगा, और --

चौदहवीं मंजिल से कूदेगा!

उसके बाद अँधेरे का इक वक़फा होगा!

क्या वो गिरते गिरते आँखें बंद कर लेगा?

या आँखें कुछ और ज्यादा फट जायेंगी?

या बस------ सब कुछ बुझ जायेगा?

गिरते गिरते भी उसने लोगों का इक कोहराम सुना!

और लहू के छीटें, उड़ कर पोपट की दूकान

के ऊपर तक भी जाते देख लिये थे!

रात का एक बजा था जब वह सीढियों से
फिर नीचे उतरा,
और देखा फुटपाथ पे आ कर,
'चॉक' से खींचा, लाश का नक्शा वहीं पड़ा था,
जिसको उसने छत के एक कबाड़ी घर से फेंका था--!!

=============================

==============================

बस एक लम्हे का झगड़ा था
दर-ओ-दीवार पे ऐसे छनाके से गिरी आवाज़
जैसे काँच गिरता है
हर एक शय में गई
उड़ती हुई, चलती हुई, किरचें
नज़र में, बात में, लहजे में,
सोच और साँस के अन्दर

लहू होना था इक रिश्ते का

सो वो हो गया उस दिन

उसी आवाज़ के टुकड़े उठा के फर्श से उस शब

किसी ने काट ली नब्जें

न की आवाज़ तक कुछ भी

कि कोई जाग न जाए

बस एक लम्हे का झगड़ा था

============================

मचल के जब भी आँखों से छलक जाते हैं दो आँसू

सुना है आबशारों को बड़ी तकलीफ़ होती है(१)

खुदारा अब तो बुझ जाने दो इस जलती हुई लौ को

चरागों से मज़ारों को बड़ी तकलीफ़ होती है(२)

कहू क्या वो बड़ी मासूमियत से पूछ बैठे है

क्या सचमुच दिल के मारों को बड़ी तकलीफ़ होती है(३)

तुम्हारा क्या तुम्हें तो राह दे देते हैं काँटे भी

मगर हम खांकसारों को बड़ी तकलीफ़ होती है(४)

≠============================

बोलिये सुरीली बोलियाँ

खट्टी मीठी आँखों की रसीली बोलियाँ

रात में घोले चाँद की मिश्री

दिन के ग़म नमकीन लगते हैं

नमकीन आँखों की नशिली बोलियाँ

गूंज रहे हैं डूबते साये

शाम की खुशबू हाथ ना आये

गूंजती आँखों की नशिली बोलियाँ

============================

मेरे रौशनदार में बैठा एक कबूतर

जब अपनी मादा से गुटरगूँ कहता है

लगता है मेरे बारे में, उसने कोई बात कही।

शायद मेरा यूँ कमरे में आना और मुख़ल होना

उनको नावाजिब लगता है।

उनका घर है रौशनदान में

और मैं एक पड़ोसी हूँ

उनके सामने एक वसी आकाश का आंगन

हम दरवाज़े भेड़ के, इन दरबों में बन्द हो जाते हैं

उनके पर हैं, और परवाज़ ही खसलत है

आठवीं, दसवीं मंज़िल के छज्जों पर वो

बेख़ौफ़ टहलते रहते हैं

हम भारी-भरकम, एक क़दम आगे रक्खा

और नीचे गिर के फौत हुए।

बोले गुटरगूँ...

कितना वज़न लेकर चलते हैं ये इन्सान

कौन सी शै है इसके पास जो इतराता है

ये भी नहीं कि दो गज़ की परवाज़ करें।

आँखें बन्द करता हूँ तो माथे के रौशनदान से अक्सर

मुझको गुटरगूँ की आवाज़ें आती हैं !!

==============================

बारिश आने से पहले

बारिश से बचने की तैयारी जारी है

सारी दरारें बन्द कर ली हैं

और लीप के छत, अब छतरी भी मढ़वा ली है

खिड़की जो खुलती है बाहर

उसके ऊपर भी एक छज्जा खींच दिया है

मेन सड़क से गली में होकर, दरवाज़े तक आता रास्ता

बजरी-मिट्टी डाल के उसको कूट रहे हैं !

यहीं कहीं कुछ गड़्हों में

बारिश आती है तो पानी भर जाता है

जूते पाँव, पाँएचे सब सन जाते हैं

गले न पड़ जाए सतरंगी

भीग न जाएँ बादल से

सावन से बच कर जीते हैं

बारिश आने से पहले

बारिश से बचने की तैयारी जारी है !!

===========================

एक नदी की बात सुनी...

इक शायर से पूछ रही थी

रोज़ किनारे दोनों हाथ पकड़ कर मेरे

सीधी राह चलाते हैं

रोज़ ही तो मैं

नाव भर कर, पीठ पे लेकर

कितने लोग हैं पार उतार कर आती हूँ ।

रोज़ मेरे सीने पे लहरें

नाबालिग़ बच्चों के जैसे

कुछ-कुछ लिखी रहती हैं।

क्या ऐसा हो सकता है जब

कुछ भी न हो

कुछ भी नहीं...

और मैं अपनी तह से पीठ लगा के इक शब रुकी रहूँ

बस ठहरी रहूँ

और कुछ भी न हो !

जैसे कविता कह लेने के बाद पड़ी रह जाती है,

मैं पड़ी रहूँ...!

================================

दरख़्त रोज़ शाम का बुरादा भर के शाखों में

पहाड़ी जंगलों के बाहर फेंक आते हैं !

मगर वो शाम...

फिर से लौट आती है, रात के अन्धेरे में

वो दिन उठा के पीठ पर

जिसे मैं जंगलों में आरियों से

शाख काट के गिरा के आया था !!

==============================

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो, कि दास्ताँ आगे और भी है

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो!

अभी तो टूटी है कच्ची मिट्टी, अभी तो बस जिस्म ही गिरे हैं

अभी तो किरदार ही बुझे हैं।

अभी सुलगते हैं रूह के ग़म, अभी धड़कते हैं दर्द दिल के

अभी तो एहसास जी रहा है।

यह लौ बचा लो जो थक के किरदार की हथेली से गिर पड़ी है

यह लौ बचा लो यहीं से उठेगी जुस्तजू फिर बगूला बनकर

यहीं से उठेगा कोई किरदार फिर इसी रोशनी को लेकर

कहीं तो अंजाम-ओ-जुस्तजू के सिरे मिलेंगे

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो!

===========================

किस क़दर सीधा सहल साफ़ है यह रस्ता देखो

न किसी शाख़ का साया है, न दीवार की टेक

न किसी आँख की आहट, न किसी चेहरे का शोर

न कोई दाग़ जहाँ बैठ के सुस्ताए कोई

दूर तक कोई नहीं, कोई नहीं, कोई नहीं

चन्द क़दमों के निशाँ, हाँ, कभी मिलते हैं कहीं

साथ चलते हैं जो कुछ दूर फ़क़त चन्द क़दम

और फिर टूट के गिरते हैं यह कहते हुए

अपनी तनहाई लिये आप चलो, तन्हा, अकेले

साथ आए जो यहाँ, कोई नहीं, कोई नहीं

किस क़दर सीधा, सहल साफ़ है यह रस्ता

===========================

बर्फ़ पिघलेगी जब पहाड़ों से

और वादी से कोहरा सिमटेगा

बीज अंगड़ाई लेके जागेंगे

अपनी अलसाई आँखें खोलेंगे

सब्ज़ा बह निकलेगा ढलानों पर

गौर से देखना बहारों में

पिछले मौसम के भी निशाँ होंगे

कोंपलों की उदास आँखों में

आँसुओं की नमी बची होगी।

===========================

वक़्त को आते न जाते न गुजरते देखा

न उतरते हुए देखा कभी इलहाम की सूरत

जमा होते हुए एक जगह मगर देखा है

शायद आया था वो ख़्वाब से दबे पांव ही

और जब आया ख़्यालों को एहसास न था

आँख का रंग तुलु होते हुए देखा जिस दिन
मैंने चूमा था मगर वक़्त को पहचाना न था

चंद तुतलाते हुए बोलों में आहट सुनी
दूध का दांत गिरा था तो भी वहां देखा
बोस्की बेटी मेरी ,चिकनी-सी रेशम की डली
लिपटी लिपटाई हुई रेशम के तागों में पड़ी थी
मुझे एहसास ही नहीं था कि वहां वक़्त पड़ा है
पालना खोल के जब मैंने उतारा था उसे बिस्तर पर
लोरी के बोलों से एक बार छुआ था उसको
बढ़ते नाखूनों में हर बार तराशा भी था

चूड़ियाँ चढ़ती-उतरती थीं कलाई पे मुसलसल
और हाथों से उतरती कभी चढ़ती थी किताबें
मुझको मालूम नहीं था कि वहां वक़्त लिखा है

वक़्त को आते न जाते न गुज़रते देखा

जमा होते हुए देखा मगर उसको मैंने

इस बरस बोस्की अठारह बरस की होगी

==============================

रिश्ते बस रिश्ते होते हैं

कुछ इक पल के

कुछ दो पल के

कुछ परों से हल्के होते हैं

बरसों के तले चलते-चलते

भारी-भरकम हो जाते हैं

कुछ भारी-भरकम बर्फ़ के-से

बरसों के तले गलते-गलते

हलके-फुलके हो जाते हैं

नाम होते हैं रिश्तों के

कुछ रिश्ते नाम के होते हैं

रिश्ता वह अगर मर जाये भी

बस नाम से जीना होता है

बस नाम से जीना होता है

रिश्ते बस रिश्ते होते हैं